ગુજરાત શૈક્ષણિક સંશોધન અને તાલીમ પરિષદ, ગાંધીનગરના પત્ર-ક્રમાંક
જીસીઈઆરટી / અભ્યાસક્રમ / 2013 / 8271 / તા. 6-4-2013થી મંજૂર

शिक्षकों तथा अभिभावकों के लिए अलग से शिक्षक संस्करण तैयार किया गया है। उसका उपयोग अवश्य करें।

हिन्दी

(प्रथम भाषा)

कक्षा 6

(प्रथम सत्र)

प्रतिज्ञापत्र

भारत मेरा देश है।
सभी भारतवासी मेरे भाई - बहन हैं।
मुझे अपने देश से प्यार है और इसकी समृद्धि तथा बहुविध परम्परा पर गर्व है।
मैं हमेशां इसके योग्य बनने का प्रयत्न करता रहूँगा।
मैं अपने माता-पिता, अध्यापकों और सभी बड़ों की इज्जत करूँगा एवं हरएक से नम्रतापूर्वक व्यवहार करूँगा।
मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि अपने देश और देशवासियों के प्रति एकनिष्ठ रहूँगा।
उनकी भलाई और समृद्धि में ही मेरा सुख निहित हैं।

રાજ્ય સરકારની વિનામૂલ્યે યોજના હેઠળનું પુસ્તક

गुजरात राज्य शाला पाठ्यपुस्तक मंडल
'विद्यायन', सेक्टर 10-ए, गांधीनगर-382010

© गुजरात राज्य शाला पाठ्यपुस्तक मंडल, गांधीनगर
इस पाठ्यपुस्तक के सर्वाधिकार गुजरात राज्य शाला पाठ्यपुस्तक मंडल के अधीन है। इसका कोई भी अंश किसी भी रूप में गुजरात राज्य शाला पाठ्यपुस्तक मंडल के नियामक की लिखित अनुमति के बिना प्रकाशित नहीं किया जा सकता।

विषय सलाहकार
डॉ. जे. जे. त्रिवेदी

लेखन-संपादन
श्री महेशभाई उपाध्याय (कन्वीनर)
श्री विजय तिवारी
श्री केशा तिवारी
श्री उर्मिला दूबे
श्री रामअकबाल सेन
श्री परमजीतकौर छाबड़ा

समीक्षा
डॉ. अर्जून तडवी
डॉ. प्रमोदकुमार तिवारी
डॉ. योगेश जे. दवे
श्री दुष्यन्त आर. कुशवाहा
श्री प्रेमसिंह के. क्षत्रिय
श्री राजित एच. यादव
श्रीमती निर्मल कमल भूटानी
श्री कमलेशकुमार के. भारद्वाज

चित्रांकन
श्री अंकुर सूचक

संयोजन
डॉ. कमलेश एन. परमार
(विषय-संयोजक : हिन्दी)

निर्माण-आयोजन
श्री हरेन शाह
(नायब नियामक : शैक्षणिक)

मुद्रण-आयोजन
श्री हरेश एस. लिम्बाचीया
(नायब नियामक : उत्पादन)

प्रस्तावना

जी.सी.ई.आर.टी के स्टेट रिसोर्स ग्रुप (SRG) द्वारा NCF-2005 और RTE - 2009 के दस्तावेजों को ध्यान में रखकर सन् 2013 में निर्मित उच्च प्राथमिक स्तरीय कक्षा 6 से 8 तक के भाषाकीय नए अभ्यासक्रम में निर्दिष्ट मुद्दों के आधार पर तैयार की गई यह पाठ्यपुस्तक कक्षा 6 हिन्दी (प्रथम भाषा) के विद्यार्थियों के समक्ष रखते हुए मंडल आनंद का अनुभव कर रहा है।

राष्ट्रीय स्तर पर उच्च प्राथमिक शिक्षा क्षेत्र के अभ्यासक्रम में हो रहे बदलाव को परखते हुए गुजरात राज्य में उच्च प्राथमिक स्तर पर पाठचर्या (Curriculum), पाठ्यक्रम (Syllabus) पाठ्यपुस्तकें (Textbooks) एवं संपूर्ण शिक्षण प्रक्रिया पर नए सिरे से सोचा गया । विद्यार्थियों में सर्जनात्मकता, विचारशक्ति, तर्कशक्ति एवं प्राप्तज्ञान के उपयोग की क्षमता विकसित हो, इन उद्देश्यों को प्राधान्य दिया गया है । यह कोशिश की गई है कि पाठ्यपुस्तकों में दी गई प्रवृत्तियों से विद्यार्थी, चर्चा, चिंतन एवं पृथक्करण कर अपने बौद्धिक स्तर को ऊपर उठाएँ, समूहकार्य करके वैयक्तिक विकास करें। फिर भी नए अभ्यासक्रम के आधार पर बनी ये पाठ्यपुस्तकें लक्ष्य न होकर एक दिशासूचक साधन मात्र हैं।

के साथ-साथ जानकारी के लिए अब अन्य नए आधुनिक उपकरण उपलब्ध हैं, अतः शिक्षा की प्रत्येक गतिविधियों में वृद्धि हुई है, इसे ध्यान में रखकर अध्ययन-अध्यापन प्रक्रिया द्वारा बालक को उत्तम नागरिक बनने की प्रेरणा मिले, राष्ट्रीय प्रेम बढ़े और उनका योग्य चरित्र निर्माण हो ।पाठ्यपुस्तक के उपयोग द्वारा इस प्रक्रिया को सरलं एवं सुरुचिपूर्ण बनाने का भी प्रयास किया गया है।

इस पाठ्यपुस्तक की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए प्रकाशित करने से पहले, इसकी पांडुलिपि की, इस स्तर पर शिक्षण कार्य करने वाले प्रबुद्ध शिक्षकों एवं विशेषज्ञों के सुझावों के अनुरूप पांडुलिपि में उचित परिवर्तन करने के बाद यह पाठ्यपुस्तक प्रकाशित की गई है । सन्-2013 में पहलीबार प्रकाशित पाठ्यपुस्तक का यह पुनःमुद्रण है।

इस पाठ्यपुस्तक की गुणवत्ता की अभिवृद्धि के लिए आप सभी विद्वज्जनो, अभिभावकों एवं पाठकों के सुझावों का हमारे लिए अत्यंत महत्व होने से पाठ्यपुस्तक मंडल सदैव आपके सुझावों का हार्दिक स्वागत करता है।

पी. भारती (IAS)	कार्यवाहक प्रमुख
नियामक	पाठ्यपुस्तक मंडल
दिनांक : 31-12-2019	गांधीनगर

प्रथम संस्करण : 2013, द्वितीय संस्करण : 2013, पुन: मुद्रण : 2014, 2016, 2017, 2018, 2019, 2020
प्रकाशक : गुजरात राज्य शाला पाठ्यपुस्तक मंडल, 'विद्यायन', सेक्टर 10-ए, गांधीनगर की ओर से पी. भारती, नियामक

मुद्रक :

मूलभूत कर्तव्य

भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य होगा कि वह –*

(क) संविधान का पालन करे और उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान का आदर करे;

(ख) स्वतंत्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आन्दोलन को प्रेरित करनेवाले उच्च आदर्शों को हृदय में संजोए रखे और उनका पालन करे;

(ग) भारत की प्रभुता, एकता और अखण्डता की रक्षा करे और उसे अक्षुण्ण रखे;

(घ) देश की रक्षा करे और आवाहन किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करे;

(ङ) भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करे जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभाव से परे हो; ऐसी प्रथाओं का त्याग करे जो स्त्रियों के सम्मान के विरुद्ध हैं;

(च) हमारी सामासिक संस्कृति की गौरवशाली परम्परा का महत्त्व समझे और उसका परिरक्षण करे;

(छ) प्राकृतिक पर्यावरण की, जिसके अन्तर्गत वन, झील, नदी और वन्य जीव हैं, रक्षा करे और उसका संवर्धन करे तथा प्राणिमात्र के प्रति दयाभाव रखे;

(ज) वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करे;

(झ) सार्वजनिक सम्पत्ति को सुरक्षित रखे और हिंसा से दूर रहे;

(ञ) व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत प्रयास करे, जिससे राष्ट्र निरन्तर बढ़ते हुए प्रयत्न और उपलब्धि की नई ऊँचाइयों को छू ले;

(ट) यदि माता–पिता या संरक्षक है, छः वर्ष से चौदह वर्ष तक की आयु वाले अपने, बालक या प्रतिपाल्य के लिए यथास्थिति, शिक्षा के अवसर प्रदान करें।

* भारत का संविधान : अनुच्छेद 51 क

अनुक्रमणिका

क्रम	कृति	प्रकार	रचयिता	पान नंबर
1.	साइंस सिटी	चित्र वर्णन	-	1
2.	नीति-सुधा	दोहे	कबीरदास	4
3.	शिवाजी का सच्चा स्वरुप	एकांकी	सेठ गोविंददास	8
4.	डॉ. होमी जहाँगीर भाभा	जीवनी	संकलित	16
●	पुनरावर्तन : 1			21
5.	बादल जी	प्रकृति काव्य	डॉ. शंभुनाथ तिवारी	23
6.	समुद्र खारा क्यों ?	लोककथा	हंसराज रहबर	26
7.	वह देश कौन-सा है ?	काव्य	रामनरेश त्रिपाठी	31
8.	नपा-तुला धुआँ	चातुर्यकथा	संकलित	36
9.	आप भले तो जग भला	निबंध	श्रीमन्नारायण	40
●	पुनरावर्तन : 2			47

इस पाठ्यपुस्तक के संदर्भ में...

पाठ्यचर्या, पाठ्यक्रम एवं पाठ्यसामग्री का निर्माण एक निरंतर एवं गतिशील प्रक्रिया है । समय-समय पर भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में विकास एवं बदलती आवश्यकताओं तथा आकांक्षाओं के कारण विषयवस्तु में परिवर्तन आता रहता है। अत: पाठ्यक्रम का नवीनीकरण अनिवार्य बन जाता है । पिछले दशक में राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर शिक्षा के क्षेत्र में काफी महत्वपूर्ण परिवर्तन आया, जिससे पाठ्यचर्या पर पुन:विचार करके बदलाव लाया गया । यह पुस्तक इसी दिशा में एक सोपान है ।

NCF - 2005 और RTE - 2009 के दस्तावेजों के मद्देनज़र पूरे देश में प्राथमिक शिक्षण के लिए पाठ्यचर्या (Curriculum), पाठ्यक्रम (Syllabus), पाठ्यपुस्तकें और शिक्षण प्रक्रिया में बदलाव का कार्य हो रहा है। यह बदलाव मुख्यत: विषयवस्तु और शिक्षण प्रक्रिया की हमारी जानकारी के बारे में है । बच्चो मे सृजनशीलता, विचारशक्ति, तर्कशक्ति और पृथ्थकरण करने की क्षमता (कौशल) विकसित हो यही नए पाठ्यक्रम के मुख्य उद्देश्य हैं । इन पाठ्यपुस्तकों में दी गई प्रवृत्तियाँ (Activities) इस तरह प्रयोजित की गई है कि प्रवृत्ति पूर्ण कर लेने के बाद उस पर चर्चा या चिंतन हो सके, व्यावहारिक उपयोजन हो सके और बच्चे क्या-क्या सीखें, यह भी सुनिश्चित कर सकें ।

हिन्दीभाषी छात्रों को मातृभाषा द्वारा सभी विषयों का ज्ञान दिया जाता है । इन्हीं छात्रों को हिन्दी 'प्रथम भाषा' के रूप में पढ़ाई जाती है । छात्रों के वैज्ञानिक एवं सामाजिक विकास में उपयोगी हो, इस उद्देश्य से हिन्दी भाषा के पाठ्यपुस्तक की पूर्ति करने का प्रयास किया गया है । गुजरात राज्य शाला पाठ्यपुस्तक मंडल हिन्दी भाषा को माध्यम से सभी कक्षाओं के लिए पाठ्यपुस्तकों का निर्माण करता है । यह पाठ्यपुस्तक भी उसकी एक कड़ी है । गुजरात राज्य के छात्रों की गुणवत्ता, स्तर एवं क्षमता को ध्यान में रखकर इस पाठ्यपुस्तक की विषयवस्तु का गद्य-पद्य में चयन किया गया है, जो छात्रों के लिए उपयोगी सिद्ध होगा।

प्रस्तुत पुस्तक की कुछ प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं:

- पाठ्यसामग्री का चयन छात्रों की बौद्धिक क्षमता, रुचि तथा उपयोगिता को दृष्टि में रखकर किया गया है । साथ ही पाठों के चयन में राष्ट्रीय शिक्षाक्रम में सम्मिलित विषयों-सामाजिक सद्भाव, पर्यावरण, राष्ट्रीयता, वैज्ञानिक अभिगम आदि का भी विशेष ध्यान रखा गया है।

- इस पाठ्यपुस्तक में एक चित्रवर्णन, 3 पद्य तथा 5 गद्य रचनाओं का चयन करते समय इस बात का ध्यान रखा गया है कि सामग्री विविधता और रोचकता की दृष्टि से इस वर्ग के बालकों को रोचक लगे। अत: इसमें कहानियों के साथ ही संस्मरण, जीवन-प्रसंग, जीवनी, निबंध, नाटक आदि गद्य विधाओं की कृतियों को बालकों की वय-मानसिक स्तर के अनुरूप ही चयनित किया गया है।

- बालकों के सांवेगिक विकास को ध्यान में रखकर देश प्रेम, वीर रस, प्रकृति–सौन्दर्य, नीति एवं कर्तव्य–भावना से परिपूर्ण कविताएँ भी दी गई हैं । पाठ की अपेक्षाओं को पूर्ण रुप से उभारने की दृष्टि से प्रत्येक

  पाठ के अंत में विस्तृत स्वाध्याय दिए गए हैं । इनमें दिए गए प्रश्न बालकों में पठित वस्तु के समझने और उस पर विचार करने की योग्यता उत्पन्न करने में सहायक होंगे ।

- प्रवृत्ति के अंतर्गत दिए गए क्रियात्मक अभ्यास प्रवृत्तियों से छात्रों में सुनने, बोलने, पढ़ने, और लिखने की योग्यताओं का विकास अपेक्षित स्तर तक हो सकेगा । इन प्रवृत्तियों से ज्ञान प्राप्ति के साथ आनंद की अनुभूति भी होगी।

- 'शब्दार्थ–टिप्पणी' के अन्तर्गत पाठ में आए कठिन शब्दों के प्रसंगगत अर्थ दिए गए हैं, उन प्रसंगों, अंतर्कथाओं को स्पष्ट किया गया है, जो विशेष परिचय की अपेक्षा रखते हैं।

- 'भाषा सज्जता' में दी गई वस्तु छात्रों को भाषा का प्रभावी उपयोग करने में सहायता देगी, साथ ही उनसे उच्चारण, वर्तनी प्रयोग तथा वाक्य विन्यास संबंधी अशुद्धियाँ भी दूर हो सकेंगी। उनकी वाचनगति बढ़ेगी और भाषा के शुद्ध प्रयोग की क्षमता का विकास होगा । इसमें दिए गऐ अभ्यासों को भली–भाँति समझकर करने से विद्यार्थी भाषा की अपेक्षित क्षमता प्राप्त कर सकेंगे और अपनी बात को अधिक प्रभावशाली ढंग से बोलकर और लिखकर अभिव्यक्त कर सकेंगे।

- मौखिक अभ्यास के द्वारा बालक की अभिव्यक्ति क्षमता को इस प्रकार विकसित करना है कि वह परिचित या अपरिचित किसी भी स्थिति में स्वयं बेझिझक वार्तालाप या प्रश्नोतर कर सके तथा किसी भी विषय पर अपने भाव या विचार स्पष्ट रूप से बोलकर प्रकट कर सके।

- समग्र पाठ्यसामग्री में तर्कपूर्ण क्रमिकता दी गई है । फिर भी अध्यापक अपनी स्थानीय आवश्यकता के अनुरूप इनके अध्यापन का क्रम बदलने के लिए पूरी तरह से मुक्त हैं ।

- सुघड़ मुद्रण और आकर्षक चतुरंगी चित्रों से वाचन के लिए विद्यार्थी प्रेरित होंगे, ऐसी आशा है।

– लेखक-संपादक

भाषा योग्यता एवं कौशल विकास के लक्ष्य

हिन्दी प्रथम भाषा में छठवीं कक्षा के लिए भाषा योग्यता एवं कौशल के लक्ष्य-ध्येय विकसित करने की योजना इस प्रकार सोची गई है । इस कक्षा में साहित्यस्वरुपों का सामान्य परिचय करवाकर, उच्चारण, व्यावहारिक व्याकरण एवं विरामचिह्नों से अवगत करवाकर, शब्दभंडार में 3000 नये शब्दों से परिचित करवाने का प्रयास रहेगा । शब्दकोश के उपयोग के प्रति भी हमारा प्रयास है । समग्र पाठ्यपुस्तक को एक साधन समझकर शिक्षक निम्नलिखित बिंदुओं पर शिक्षण केन्द्रित करेंगे तो भाषा-शिक्षा का यह कार्य सार्थक सिद्ध होगा।

अर्थग्रहण

प्रत्येक छात्र को केन्द्र में रखकर श्रवण एवं पठन के साथ निश्चित समय में अर्थबोध कराने का प्रयास किया जाएगा। छात्र परिचित एवं अपरिचित संवाद समझकर प्रत्यायन करेगा। खेल, मुलाकात, पूछताछ, प्रवृत्तियाँ एवं प्रोजेक्ट द्वारा अर्थग्रहण का प्रयास किया जाएगा। दृश्य-श्राव्य सामग्री, समाचार-पत्र, पत्रिकाएँ एवं संदर्भ साहित्य का पठन करवाया जाएगा। छात्र प्रादेशिक संदर्भ को समझकर व्यावहारिक व्याकरण का ज्ञान प्राप्त करेगा।

अभिव्यक्ति - प्रत्यायन

इस बात का ध्यान रखा जाएगा कि छात्र बिना किसी हिचकिचाहट के मातृभाषा में हावभाव सहित अभिव्यक्ति करें। काव्य कंठस्थ करके उसका गान तथा पठन करें । परिचित प्रसंग, स्थान विशेष या स्थिति का वर्णन कर सकें, प्रश्नोत्तर करते हुए प्रत्यायन करें, चुटकुले सुनाएँ, कहानी या प्रसंग अपने शब्दों में अभिव्यक्त करें। चूँ कि योग्य लेखन क्षमता विकसित करने का लक्ष्य भी सिद्ध करना है अत: यह ध्यान रखना है कि वर्तनी (हिज्जे), शब्द, उचित विरामचिह्नों का उपयोग करते हुए लिखें, श्रुतलेखन करें। कहावतें, मुहावरे, गद्य-पद्य, सुविचार, काव्यपंक्ति, दोहे, विचार-विस्तार एवं कंठस्थ काव्य का लेखन ; पत्र, निबंध आदि के स्वतंत्र लेखन की क्षमता का विकास करना है। इस क्षमता के लिए निश्चित समय आयोजन भी करना है।

सर्जनात्मकता

छठवीं कक्षा के छात्रों की सर्जनात्मक शक्ति का विकास हो, इस हेतु से चित्रवर्णन एवं उसका लेखन भी करवाया जाएगा। यह अपेक्षित है कि किसी एक विषय या विचार पर अपनी स्वतंत्र अभिव्यक्ति कर सके। प्रोजेक्ट का वर्णन, पत्रलेखन तथा शिक्षण में अद्यतन साधनों द्वारा छात्र अपने विचारों की अभिव्यक्ति करें। ऐसा प्रयास किया जाएगा कि अनुलेखन, प्रसंगवर्णन या ढाँचे पर से कहानी का स्वतंत्र लेखन करें।

व्यावहारिक उपयोजन

छात्र मुलाकात के समय आत्मविश्वास पूर्वक अपनी बात कहने तथा प्रश्नोत्तर करने का प्रयास करें। चित्र को समझें, संकेतों का अर्थ समझकर प्रयोग करें। ऐसी स्थिति का निर्माण करना है कि छात्र पठित साहित्य को चित्र या अन्य रूप

में प्रस्तुत करने की क्षमता एवं व्याकरण का उपयोग करके नए शब्दों का निर्माण तथा उनका उपयोग अपनी भाषा में स्वाभाविक रुप से करें।

तार्किक चिंतन

चित्रों के आधार पर छात्र अपने विचार छोटे–छोटे वाक्यों में व्यक्त कर सकें, उनके लिए क्या अच्छा है और क्या बुरा है, इस विषय में सोचकर निर्णय ले सकें, अपनी समस्याओं का हल स्वयं ढूँढ़ सकें, पाठय–सामग्री के कार्यकारण संबंधों को समझकर स्वयं निर्णय करने का प्रयास करें। इन सभी बिंदुओं के लिए समय निर्धारित किया जाए। छात्रों को विविध दिशाओं में सोचने – समझने का अवसर दिया जाएगा। शिक्षक का आयोजन इसमें महत्वपूर्ण रहेगा।

भाषा शिक्षण के लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए विविध पद्धतियों, प्रयुक्तियों एवं प्रविधियों का उपयोग करना आवश्यक है; जैसे समूहचर्चा, नाट्यीकरण समस्या एवं हल करने के उपाय, सेमिनार, स्वाध्याय, निरीक्षित अध्ययन, प्रश्नोत्तर, आगमन–निगमन पद्धति, मुलाकात, निदर्शन, चित्र–दर्शन एवं प्रत्यायन द्वारा भाषा शिक्षण को समुचित परिणामलक्षी बनाया जा सकता है।

इसके उपरांत कक्षा में शिक्षक चुटकुले, तुकबंदी, काव्यगान, पठन, कहानी, कथन, अभिनय, माइम, स्टेच्यू, रोल–प्ले, पपेट, शब्दखेल, क्वीज, काव्यपूर्ति, ढाँचे पर से कहानी लेखन, चित्रकथा, उदाहरण, संवाद, अर्थविस्तार, CAL (कम्प्युटर एइडेड लर्निंग)CBI(कम्प्यूटर बेज्ड इन्स्ट्रकशन) जैसी प्रयुक्तियों प्रविधियों का उपयोग कर सकता है।

कक्षा में ऐसी स्थिति का निर्माण करने का दायित्व शिक्षक का है कि इन सारी प्रयुक्तियों द्वारा छात्र में अर्थग्रहण क्षमता, एकाग्रता, चिन्तन, सर्जनात्मकता इत्यादि विकसित करके प्राप्त ज्ञान का व्यावहारिक, उत्तम जीवन के लिए उपयोग कर सके, पाठ्यपुस्तक का उपयोग केवल साधन या दिशा प्राप्ति के लिए ही है।

फलश्रुति

भाषा शिक्षण द्वारा छात्र का अभीष्ट व्यवहार परिवर्तन, संस्कारों में वृद्धि, समूहजीवन, दूसरे के विचारों का स्वीकार, अन्य की सहायता, व्यक्तित्व विकास, तर्कशक्ति, चिंतन, विवेक,योग्य प्रत्यायन। एवं जीवनमूल्यों की प्राप्ति में सहायक होना है। हमारी सांस्कृतिक विरासत का रक्षण, संवर्धन एवं संक्रमण, भाषा प्रभुत्व, सौंदर्यानुभूति जैसे विविध पहलुओं के विकास पर प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से ध्यान रखने का कार्य शिक्षक का है। इन उद्देश्यों की पूर्ति में ही हमारा ध्यान रहे और हम राष्ट्र के एक उत्तम नागरिक के निर्माण का अपना महत्वपूर्ण कर्तव्य पूर्ण करेंगे।

– लेखक – संपादक

1. साइंस सिटी (विज्ञान नगरी)

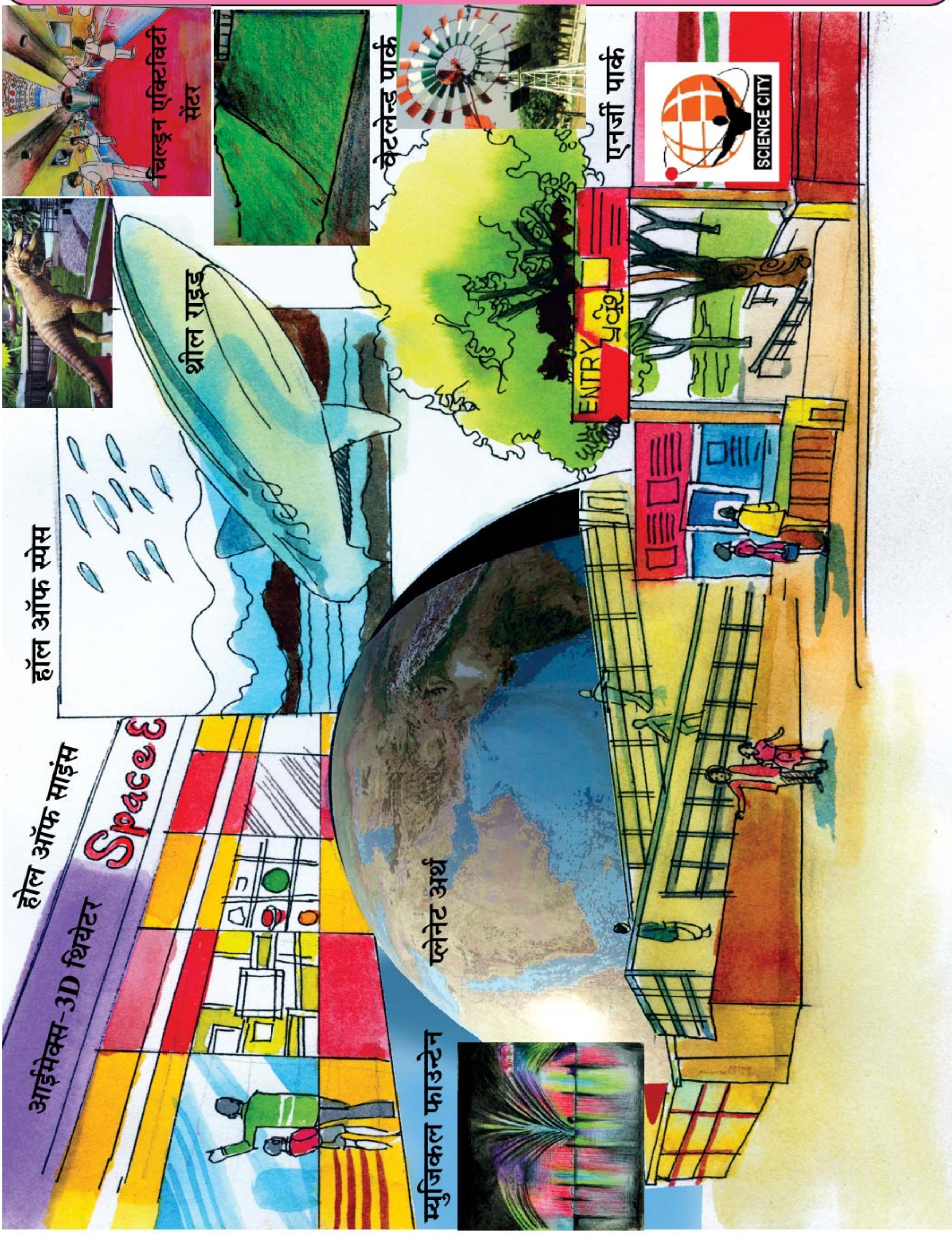

शब्दार्थ-टिप्पणी

साइंस सिटी विज्ञान नगरी **होल ऑफ साइंस** विज्ञान कक्ष **हॉल ऑफ स्पेस** अवकाश कक्ष **एनर्जी पार्क** ऊर्जा बाग **थ्रील राइड** एक प्रकार का यात्रा यान **चिल्ड्रन एक्टिविटी सेंटर** बाल-प्रवृत्ति कक्ष **वेटलेन्ड पार्क** दलदली जमीन वाला बाग **आईमेक्स - 3D थियेटर** त्रिपरिमाण्वीय सिनेमा गृह **म्युजिकल फाउन्टेन** संगीतमय फव्वारा **प्लेनेट** ग्रह **अर्थ** पृथ्वी **लाइफ साइंस पार्क** जीवविज्ञान बाग **एमफी थियेटर** नाट्यतख्त

अभ्यास

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

(1) यह चित्र किस विषय से संबंधित है ?

(2) प्रस्तुत चित्र में किस स्थान का उल्लेख किया गया है ?

(3) चित्र में क्या-क्या दिखाई दे रहा है ?

(4) टिकट खिड़की कहाँ है ?

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

(1) साइंस सिटी गुजरात के किस शहर में स्थित है ?

(2) साइंस सिटी के मुख्य कितने विभाग हैं ?

(3) पवनचक्की कहाँ पर स्थित है ?

(4) बच्चे किस विभाग में स्वयं प्रयोग करते हैं ?

(5) लाइफ साइंस पार्क में किसका मॉडल रखा गया है ?

(6) रॉकेट का मॉडल किस विभाग में है ?

(7) साइंस सिटी में स्थित सिनेमागृह का नाम क्या है ?

(8) फव्वारे की क्या विशेषता है ?

2. आपने किड्स सिटी, मॉल, रेलवे स्टेशन, बस स्टेशन, फायर स्टेशन इत्यादि स्थानों को देखा होगा। अपने अनुभवों के आधार पर किसी एक स्थल का दस वाक्यों में वर्णन कीजिए।

3. निम्नलिखित सार्वजनिक स्थानों पर पाई जानेवाली सूचनाओं को नोट कीजिए:

पाठशाला	**-**	**कतार में चलिए।**	**शांति बनाए रखिए।**
(1) दूध डेरी	-		
(2) आरोग्य केन्द्र	-		
(3) ग्राम पंचायत	-		
(4) बस स्टेशन	-		
(5) रेलवे स्टेशन	-		
(6) मॉल	-		

प्रवृत्ति

- अहमदाबाद-कांकरिया किड्स सिटी को देखने जाइए।
- स्वच्छता, अच्छे आचरण से संबधित सूत्र बनाकर अलबम तैयार कीजिए।
- विज्ञान जगत से संबंधित मनाए जानेवाले विशेष दिवसों की सूचि तैयार करके अलबम बनाइए।
- अपने शिक्षक की सहायता से साइंस सिटी की मुलाकात करके उसका वर्णन अपने शब्दों में लिखिए।

2. नीति-सुधा

कबीरदास

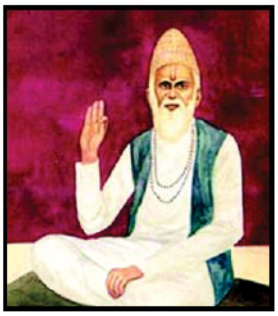

(जन्म : सन् 1398; निधन : सन् 1518 ई.)

कबीर जन्म से जुलाहे थे। उनका निवास काशी था। उनके गुरु रामानंद थे। उनका पालन पोषण नीरु जुलाहा और नीमा ने किया था। कहा जाता है कि कबीर निरक्षर थे। आपके द्वारा रचित दोहे मानव समाज के लिए अत्यंत उपयोगी और नीति विषयक हैं।

प्रस्तुत दोहों में सत्य, भलमनसाहत, परोपकार, मधुरवाणी, आत्मखोज और अच्छी संगति का महत्त्व बताया गया है।

साँच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप।
जाके हिरदै साँच है, ताके हिरदै आप ॥1॥

जो तोको काँटा बुवै, ताहि बोय तू फूल।
तोहि फूल को फूल है, वाको है तिरसूल ॥2॥

बड़ा हुआ तो क्या हुआ, जैसे पेड़ खजूर।
पंथी को छाया नहीं, फल लागै अति दूर ॥3॥

ऐसी बानी बोलिए, मन का आपा खोय।
औरन को सीतल करे, आपहुँ सीतल होय ॥4॥

बुरा जो देखन मैं चला, बुरा न मिलिया कोय।
जो दिल खोजा आपना, मुझसा बुरा न कोय ॥5॥

कबिरा संगति साधु की, ज्यों गंधी की बास।
जो गंधी कछु दे नहीं, तो भी बास सुवास ॥6॥

शब्दार्थ-टिप्पणी

साँच सच, सत्य, सही **पंथी** राही, राहगीर, पथिक, यात्री **तप** तपस्या **आपा** धमंड, अहंकार, अहं **जाके** जिसके **आपहुँ** खुद, स्वयं **हिरदै** हृदय, दिल **संगति** साथ **ताके** उसके **साधु** सज्जन **गंधी** इत्र बेचनेवाला

अभ्यास

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

(1) 'पंथी को छाया नहीं, फल लागै अति दूर' से आपका क्या तात्पर्य है ?

(2) 'मन का आपा खोना' अर्थात् क्या ?

(3) संगति के विषय में कवि क्या कहता है ?

(4) 'मुझसे बुरा न कोय' कवि ऐसा क्यों कहता है ?

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

(1) कबीर ने सच और झूठ की तुलना किस-किससे की है ?

(2) सच्चे हृदय में किसका निवास है ?

(3) खजूर के पेड़ की क्या विशेषता बताई गई है ?

(4) हमें कैसी वाणी बोलनी चाहिए ?

(5) मीठी वाणी बोलने से क्या होता है ?

(6) कबीर के अनुसार सबसे बुरा व्यक्ति कौन है ?

(7) हमें सज्जन की संगति क्यों करनी चाहिए ?

2. काव्य-पंक्तियाँ पूर्ण कीजिए :

(1) बड़ा हुआ तो .... लागै अति दूर ॥

(2) ऐसी बानी बोलिए .... आपहुँ सीतल होय ॥

(3) बुरा जो देखन .... मुझ-सा बुरा न कोय ॥

3. निम्नलिखित शब्दों के विरोधी शब्द सारणी में से खोजकर लिखिए :

उदाहरण : शीतल × ऊष्ण

(1) सज्जन ×......... (2) सच ×......... (3) सुगंध ×.........

(4) प्रलय ×......... (5) संग ×.........

ई	ख	र	प	भा	त
न	र	म	ग	र	म
दु	र्गं	ध	भा	त	नि
र्ज	ङ	झू	ठ	प	र्मा
न	मो	ना	रा	य	ण
म	ऊ	मा	कु	मा	र्ग
की	कृ	ष्ण	दा	सं	ज
न	ञ	ण	ली	त	ग

4. अपने पाँच मित्रों की जानकारी एकत्र कर निम्नांकित सारणी की पूर्ति कीजिए :

क्रम	नाम	पिता का नाम	माता का नाम	जन्मतिथि	पता	परिवार के सदस्यों का नाम	पसंद	विशेषता
1								
2								
3								
4								
5								

5. निम्नलिखित दोहे का भावार्थ स्पष्ट कीजिए :

जो तोको काँटा बुवै, ताहि बोय तू फूल।
तोहि फूल को फूल है, वाको है तिरसूल॥

प्रवृत्ति

- कबीरदास के अन्य दोहों का संग्रह तैयार कीजिए।
- अन्य कवियों के दोहों का संग्रह तैयार कीजिए।
- गुजराती के पाँच दोहे कंठस्थ कीजिए।
- खजूर और ताड़ के वृक्षों का अन्तर जानिए।

भाषा-सज्जता

हिन्दी शब्दकोश का उपयोग :

वाचन करते हुए कोई ऐसा शब्द आए जिसका अर्थ हमें न मालूम हो तो उसका अर्थ किस प्रकार जानेगें ? पाठ्यपुस्तक में तो ऐसे कठिन शब्दों का स्पष्टीकरण पाठ के अन्त में शब्दार्थ टिप्पणी में दिया रहता है। लेकिन अन्य पुस्तकों में ऐसा नहीं होता है। कठिन शब्दों का अर्थ खुद भी प्राप्त किया जा सकता है। शब्दों का अर्थ प्राप्त करने के लिए शब्दकोश उपयोगी है। शब्दकोश में शब्दों को सुगठित क्रमानुसार व्यवस्थित लिखा रहता है।

(1) शब्दों को सर्वप्रथम बारहखड़ी के अनुसार तथा वर्णमाला के क्रम में व्यवस्थित किया जाता है। बारहखड़ी का क्रम अं, अ, आं, आ, इं, इ वर्णमाला क्रमः क, ख, ग, घ

(2) शब्दकोश में सर्वप्रथम 'अ' से शुरु होनेवाले तथा अंत में 'ह' से शुरु होनेवाले शब्द आते हैं। 'क्ष' यह 'क' और 'श' का संयुक्ताक्षर होने के कारण 'क्ष' से शुरु होनेवाले शब्द 'क' के क्रम में लिखे जाते हैं।

'ज्ञ' यह 'ज' और 'न' का संयुक्ताक्षर होने के कारण 'ज्ञ' से शुरु होनेवाले शब्द 'ज' के क्रम मे लिखे जाते हैं।

(3) 'क' से 'ह' तक के अक्षरों को शब्दकोश के क्रम में व्यवस्थित किया जाता है। 'क' का क्रम निम्नलिखित रूप से होगा :

कं, क, कां, का, किं, कि, कीं, की, कुं, कु, कूं, कू, कृ, कें, के, कैं, कै, कों, को, कौं, कै, क्रं, क्र,....

(4) शब्दों के प्रथम अक्षर समान हों तो दूसरे अक्षर के अनुसार और दूसरा अक्षर समान हो तो तीसरे अक्षर के अनुसार आगे, खोजना चाहिए। जैसे:– विषय, विषम, विपद में 'वि' समान है। 'ष' और 'प' में 'प' पहले आता है, इसलिए पहला शब्द विपद आयेगा। अन्य दोनों शब्दों में 'वि' और 'ष' समान है, अत:तीसरा अक्षर 'य' और 'म' में पहले 'म' आता है, इस प्रकार इन शब्दों का क्रम इस प्रकार होगा विपद, विषम, विषय

(5) जिस अक्षर के बारहखड़ी का क्रम पूरा होने के बाद संयुक्ताक्षर का क्रम शुरू होता है। उसमें आनेवाले अक्षरों का क्रम भी बारहखड़ी के अनुसार ही निश्चित किया जाता है। जैसे कि स्मित और स्थिर में 'स्थिर' के बाद 'स्मित' आयेगा।

(6) स्वरों का क्रम भी बारहखड़ी के क्रम के अनुसार निश्चित किया जाता है।

3. शिवाजी का सच्चा स्वरूप

सेठ गोविन्द दास

(जन्म : 1896, मृत्यु : 1974)

सेठ गोविन्ददास का जन्म जबलपुर, मध्यप्रदेश में हुआ था । वे हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग के अध्यक्ष रह चुके हैं और भारतीय संसद के वरिष्ठतम सदस्य रहे। इनकी गणना हिन्दी के गिने-चुने श्रेष्ठ नाटककारों में है। इन्होंने अपने नाटकों में विविध युगों और परिस्थितियों की कथावस्तु ली है। 'शशिगुप्त', 'कर्तव्य', हर्ष, और प्रकाश उनके प्रमुख नाटक हैं। इनके नाटकों पर भारत की प्राचीन नाट्य कला और पिछली शतियों की पाश्चात्य नाट्य कला का भी प्रभाव है ।

प्रस्तुत एकांकी में शिवाजी के प्रामाणिक चरित्र का परिचय होता है। वे पर स्त्री को अपनी माता तुल्य मानते हैं और हर कीमत पर उसकी रक्षा करना अपना धर्म समझते हैं। साथ ही शिवाजी सभी धर्मों को समान दृष्टि से देखते हैं। इस एकांकी से शिवाजी के सर्वधर्म समभाव की भावना परिलक्षित होती है।

पात्र

(1) शिवाजी – प्रसिद्ध मराठा वीर।

(2) मोरोपन्त पिंगले – पेशवा।

(3) आबाजी सोनदेव – शिवाजी का एक सेनापति।

(स्थान – राजगढ़ दुर्ग का एक दालान)

(समय – सन् 1648 ई. संध्या)

(दाहिनी ओर दालान का कुछ हिस्सा दिखाई देता है। दालान की छत पत्थर के खम्भों पर है। उसके पीछे की दीवार भी पत्थर की ही है । दालान के पीछे की ओर दाहिनी तरफ दूर पर, गढ की सफील और कुछ बुर्ज दीख पड़ते हैं। बाईं तरफ सह्याद्रि पर्वत – माला की शिखरावली दृष्टिगोचर होती है । कुछ शिखरों की ओट से सूर्य अस्त हो रहा है, जिसके अन्तिम प्रकाश में सारा दृश्य प्रकाशित है। दालान के सामने किले का खुला मैदान है। मैदान में एक ऊँचे स्तम्भ पर भगवे रंग का मराठा झंडा फहरा रहा है। दालान में जाजम बिछी है। उस पर किमखाब की गद्दी पर मसनद के सहारे शिवाजी वीरासन में किसी विचार में मग्न हैं।

दालान के बाहर शस्त्रों से सुसज्जित दो मावले शरीररक्षक खड़े हैं। बाईं ओर से मोरोपन्त पिंगले का प्रवेश। मोरोपन्त अधेड़ अवस्था में गेहुँए रंग का ऊँचा पूरा व्यक्ति है। वेश-भूषा शिवाजी से मिलती जुलती है। केवल सिर की पगड़ी मुगल तर्ज की न होकर मराठी ढंग की है। उसके मस्तक पर त्रिपुण्ड भी है।)

मोरोपन्त : (अभिवादन करके) – श्रीमन्त सरकार ! सेनापति आबाजी सोनदेव कल्याण प्रान्त को जीत, वहाँ का सारा खजाना लूटकर आए हैं ।

शिवाजी : (चौंककर) – अच्छा ! (मोरोपन्त की ओर देखकर) बैठो पेशवा ! बड़ा शुभ सन्देश लाए । आबाजी सोनदेव हैं कहाँ ?

मोरोपन्त : (वीरासन में बैठकर) – श्रीमन्त की सेवा में अभी उपस्थित हो रहे हैं।

(कुछ देर निःस्तब्धता शिवाजी और मोरोपन्त दोनों उत्सुकता से बाईं ओर देखते हैं। कुछ ही देर में आबाजी सोनदेव बाईं ओर से आता हुआ दिखाई देता है । उसके पीछे कुलियों का बड़ा भारी झुण्ड है। हर कुली के सिर पर एक भारी टोकरा है। उनके पीछे एक पालकी है। पालकी बन्द है। आबाजी सोनदेव भी अधेड़ अवस्था का ऊँचा पूरा मनुष्य है। वेश–भूषा मोरोपन्त के सदृश्य है। आबाजी सोनदेव दालान में आकर शिवाजी को अभिवादन करता है। कुलियों का झुण्ड और पालकी दोनों दालान के बाहर रुक जाते हैं।)

शिवाजी : बैठो, आबाजी ! कल्याण – विजय पर तुम्हें बधाई है।

मोरोपन्त : (बैठते हुए) बधाई है श्रीमन्त सरकार को।

शिवाजी : कहो, पैदल मावलियों ने अधिक वीरता दिखाई या हेटकारियों ने ?

आबाजी : दोनों ने ही श्रीमन्त सरकार ।

शिवाजी : और घुड़सवारों में वारगीरों ने या शिलेदारों ने ?

आबाजी : इनमें भी दोनों ने ही श्रीमन्त।

शिवाजी : सेना के अधिपति कैसे रहे ?

आबाजी : पैदल के अधिपति – नायक, हवलदार, जुमालदार और कर हजारी तथा घुड़सवारों के अधिपति – हवलदार, जुमालदार और सूबेदार सभी का काम प्रशंसनीय रहा, श्रीमन्त सरकार।

शिवाजी : (कुलियों की ओर देखकर मुस्कुराते हुए) – कल्याण का खजाना भी लूट लाए, बहुत माल मिला ?

आबाजी : हाँ, श्रीमन्त ! सारा खजाना लूट लिया गया और इतना माल मिला जितना अब तक की किसी लूट में न मिला था । चाँदी, सोना, जवाहरात, न जाने क्या–क्या मिला ! मैं तो समझता हूँ, श्रीमन्त । केवल दक्षिण ही नहीं उत्तर की भी विजय इस सम्पदा से हो सकेगी ।

शिवाजी : (कुलियों के पीछे पालकी को देखकर) – और उस पालकी में क्या है ?

आबाजी : (मुस्कराते हुए) – उसमें.... उस पालकी में श्रीमन्त, इस विजय का सबसे बड़ा तोहफा है।

शिवाजी : (उत्सुकता से आबाजी की ओर देखते हुए) – अर्थात् ?

आबाजी : श्रीमन्त ! कल्याण के सूबेदार अहमद की पुत्रवधू के सौंदर्य का वृत्त कौन नहीं जानता। उसे ही श्रीमन्त की सेवा के लिए बन्दी करके लाया हूँ।

(शिवाजी की सारी प्रसन्नता एकाएक लुप्त हो जाती है। उनकी भृकुटि चढ़ जाती है और नीचे का ओंठ ऊपर के दांतों के नीचे आ जाता है । आबाजी सोनदेव शिवाजी की परिवर्तित मुद्रा को देखकर घबड़ा जाता है। मोरोपन्त एकटक शिवाजी की ओर देखता है। कुछ देर निःस्तब्धता रहती है।)

शिवाजी : (भर्राये हुए स्वर में) – पालकी को तत्काल भीतर ले आओ ।

(आबाजी सोनदेव जल्दी से दालान के बाहर जाता है। शिवाजी एकटक पालकी की ओर देखते हैं, और मोरोपन्त शिवाजी की तरफ । कुछ ही क्षणों में पालकी दालान में आती है। ज्यों ही पालकी दालान में रखी जाती है त्यों ही शिवाजी जल्दी से पालकी के निकट पहुँचते हैं। मोरोपन्त शिवाजी के पीछे–पीछे जाता है।)

शिवाजी : (आबाजी सोनदेव से) – खोल दो पालकी, आबाजी।

(आबाजी पालकी के दरवाजे खोलता है। अहमद की पुत्रवधू उसमें से निकल कर चुपचाप एक ओर सिकुड़कर खड़ी हो जाती है। वह परम सुन्दरी है। वेश–भूषा मुगल स्त्रियों के सदृश है।)

शिवाजी : (अहमद की पुत्र–वधू से) माँ ! शिवा अपने सिपहसालार की इस नामाकूल हरकत पर आपसे मुआफी चाहता है। आह ! कैसी अजीबोगरीब खूबसूरती है आपकी ! आपको देखकर मेरे दिल में एक, सिर्फ एक बात उठ रही है । कहीं मेरी माँ में आपकी सी खूबसूरती होती तो मैं भी बदसूरत

न होकर एक खूबसूरत शख्स होता । माँ ! आपकी खूबसूरती को मैं सिर्फ एक काम में ला सकता हूँ – उसका हिन्दू विधि से पूजन करूँ उसकी इस्लामी तरीके से इबादत करूँ । आप जरा भी परेशान न हों। माँ ! आपको आराम, इज्जत, हिफाजत और खबरदारी के साथ आपके शौहर के पास पहुँचा दिया जाएगा। बिना देरी के फौरन । (आबाजी की ओर घूमकर) आबाजी ! तुमने ऐसा काम किया है, जो कदाचित् क्षमा नहीं किया जा सकता। शिवा को जानते हुए भी तुम्हारा साहस ऐसा घृणित कार्य करने के लिए कैसे हुआ ? शिवा ने आज पर्यन्त किसी मसजिद की दीवार में बाल बराबर भी दरार न आने दी। शिवा को यदि कहीं कुरान की पुस्तक मिली तो उसने उसे सिर पर चढ़ाया, उसके एक पन्ने को भी किसी प्रकार की क्षति पहुँचाए बिना मौलवी साहब की सेवा में भेज दिया। हिन्दू होते हुए भी शिवा के लिए इस्लाम–धर्म भी आदरणीय है। इस्लाम के पवित्र स्थान, उसके पवित्र ग्रन्थ, सम्मान की वस्तुएँ हैं। शिवा हिन्दू और मुसलिम प्रजा में कोई भेद नहीं समझता। अरे उसकी सेना में मुसलिम सैनिक तक हैं। वह देश में हिन्दू राज्य ही नहीं सच्चे स्वराज्य की स्थापना चाहता है । आततायियों से सत्ता का अपहरण कर उदार–नेताओं के हाथों में अधिकार देना चाहता है। फिर पर–स्त्री तो हर एक के लिए माता के समान है । जो अधिकार प्राप्त जन हैं, जो सरदार हैं या राजा, उन्हें –उन्हें तो इस सम्बन्ध में विवेक–सबसे अधिक विवेक–रखना आवश्यक है। (कुछ रुककर) आबाजी ! क्या तुम मेरी परीक्षा लेना चाहते थे ! इसलिए तो तुमने यह कृत्य नहीं की ? शिवा ये लड़ाई–झगड़े, ये लूटपाट क्या व्यक्तिगत सुखों के लिए कर रहा है ? क्या स्वयं चैन उड़ाना उसका उद्देश्य हैं ? तब – तब तो ये रक्तपात, ये लूट मार, घृणित, अत्यन्त घृणित कृतियाँ हैं। शिवा में यदि शील नहीं हो सकता। फिर तो हममें और इन्द्रियलोलुप लुटेरों तथा डाकुओं में कोई अन्तर ही नहीं रह जाता। अरे, तब तो हमारे जीवन से, हमारी विजय से हमारी पराजय कहीं अधिक श्रेयस्कर है । (मोरोपन्त से) आह! पेशवा ! यह–यह मेरे एक सेनापति ने–मेरे एक सेनापति ने क्या कर डाला ? लज्जा से मेरा सर आज पृथ्वी में नहीं, पाताल में घुसा जाता है। इस पाप का न जाने मुझे कैसा – कैसा प्रायश्चित करना पड़ेगा (कुछ रुककर) पेशवा ! इस समय मैं तो केवल एक घोषणा करता हूँ – भविष्य में अगर कोई ऐसा कार्य करेगा तो उसका सिर उसी समय धड़ से जुदा कर दिया जाएगा।

शब्दार्थ–टिप्पणी

दुर्ग किला **दृष्टिगोचर** दिखाई देना **भगवा** केसरी **मस्तक** सिर, मस्तिष्क **झुण्ड** समूह **सम्पदा** सम्पत्ति **भृकुटि** भौंह **तोहफा** भेंट, सौगात **तत्काल** तुरन्त, शीध्र **मुआफी** माफी, क्षमा **शख्स** इंसान **हिफाजत** रक्षा **शौहर** पति **क्षति** नुकसान **शील** चरित्र, आचरण

मुहावरे

लुप्त हो जाना गुम होना, खो जाना **भृकुटि चढ़ जाना** क्रोध करना **चैन उड़ाना** सुख से रहना **प्रायश्चित करना** पछताना **सिर धड़ से जुदा करना** मार डालना

अभ्यास

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

(1) आबाजी सोनदेव कौन हैं ?

(2) मोरोपंत शिवाजी को क्या संदेश देते हैं ?

(3) आबाजी सोनदेव क्या-क्या लूट कर लाये हैं ?

(4) आबाजी सोनदेव ने कल्याण प्रान्त की विजय का सबसे बड़ा पुरस्कार किसे माना ?

(5) अंत में शिवाजी ने क्या घोषणा की ?

(6) प्रस्तुत नाटक में आपका प्रिय पात्र कौन है ?

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

(1) राजगढ़ के दुर्ग का प्राकृतिक वर्णन अपने शब्दों में कीजिए ?

(2) आबाजी द्वारा दिए गए पुरस्कार को देख शिवाजी की क्या दशा हुई ?

(3) शिवाजी ने अहमद की पुत्रवधू से क्या कहा ?

(4) शिवाजी इस्लाम धर्म का आदर करते थे ऐसा हम किन-किन घटनाओं से कह सकते हैं ?

(5) इस पाठ में शिवाजी के चरित्र के किन-किन गुणों का पता चलता है ?

(6) हमें शिवाजी के चरित्र से क्या शिक्षा मिलती है ?

(7) किस घटना द्वारा शिवाजी के सच्चे स्वरूप के दर्शन होते हैं ?

2. निम्नलिखित रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

(1) मैदान में एक ऊँचे स्तम्भ पर .... रंग का मराठा झंडा फहरा रहा है।

(2) मोरोपंत अधेड़ अवस्था में .... रंग का ऊँचा पूरा व्यक्ति है।

(3) हर कुली के सिर पर एक भारी................ है।

(4) हिन्दू होते हुए भी शिवा के लिए .... धर्म भी आदरणीय है।

(5) लज्जा से मेरा सर आज पृथ्वी में नहीं, ... में घुसा जाता है।

3. निम्नलिखित वाक्य किसने, किससे कहे हैं :

(1) बधाई है श्रीमन्त सरकार को ।

(2) सेना के अधिपति कैसे रहे ?

(3) उस पालकी में श्रीमन्त, इस विजय का सबसे बड़ा तोहफा है।

(4) पालकी को तत्काल भीतर ले आओ ।

(5) आबाजी क्या तुम मेरी परीक्षा लेना चाहते थे!

4. निम्नलिखित मुहावरों के अर्थ लिखिए एवं वाक्यप्रयोग कीजिए :

- लुप्त हो जाना
- प्रायश्चित करना
- भृकुटि चढ़ जाना
- सिर धड़ से जुदा करना
- चैन उड़ाना

5. निम्नलिखित शब्दों के समानार्थी शब्द लिखिए :

पर्वत – .... सोना – ....

माँ – .... संध्या – ....

सूर्य – .... पृथ्वी – ....

राजा – .... झंडा – ....

6. निम्नलिखित शब्दों के विरुद्धार्थी शब्द लिखिए :

वीर × .... विजय ....

प्रकाश .... सुंदर ....

रक्षक .... विवेक ....

नायक .... आवश्यक ....

7. निम्नलिखित शब्दों के लिंग पहचानिए :

जाजम – .... पालकी – ....

किला – .... पुस्तक – ....

खम्भा – .... परीक्षा – ....

खजाना – .... लज्जा – ....

8. शिवाजी हिन्दू थे किन्तु इस्लाम धर्म का आदर करते थे अर्थात् 'सर्वधर्म समभाव' विषय पर आपके शिक्षक की मदद से आठ-दस वाक्य लिखिए :

9. निम्नलिखित कोष्ठक में दी गई अधूरी जानकारी को पूर्ण कीजिए :

धर्म का नाम	धर्म ग्रंथ	धर्म स्थान	त्यौहार
हिन्दू			
मुस्लिम			
सिक्ख			
ईसाई			
पारसी			
जैन			
बौद्ध			

10. आपके विस्तार के प्रामाणिक व्यक्ति के बारे में पाँच-सात वाक्य लिखिए और वर्गखंड में विद्यार्थियों के समक्ष सस्वर पढ़िए :

प्रवृत्ति

- शिवाजी के जीवन से संबंधित अन्य संदर्भ साहित्य पढ़ें ।
- स्वतंत्रता सेनानियों के चित्रों का अलबम तैयार कीजिए।
- इस नाटक का मंचन कीजिए।

भाषा–सज्जता

विराम चिह्न (Punctuation)

पूर्णविराम (Full Stop) (।) इसका प्रयोग वाक्य समाप्त होने पर होता है।

जैसे – ☞ मोहन ने पत्र लिखा ।

☞ सीता स्कूल नहीं गयी।

- **अल्प विराम (Comma) (,) :** अल्प विराम का प्रयोग वाक्य में थोड़ा रुकने का संकेत देने के लिए होता है।

जैसे – ☞ राम, सीता और मोहन घर गये।

☞ रोको मत, जाने दो।

- **प्रश्नवाचक चिह्न (Mark of Interrogation) (?) :** किसी व्यक्ति से कोई जानकारी प्राप्त करने हेतु उपयोग में लिए जानेवाले वाक्य के अंत में प्रश्नवाचक चिह्न लगाया जाता है ।

जैसे – ☞ क्या तुम विद्यालय गये थे ?

☞ तुम क्या करते हो ?

- **आश्चर्यवाचक चिह्न (Mark of Exclamation) (!) :** आश्चर्य, घृणा, सुख, दु:ख आदि भावों को प्रकट करने के लिए इसका प्रयोग होता है । जैसे – अरे !, बाप रे, !,अहा !, आदि ।

  ☞ वाह ! अपने तो कमाल कर दिया ।

  ☞ अरे ! क्या हो गया ।

- **योजक (Hyphen) – :** योजक चिह्न का प्रयोग सामासिक शब्दों को जोड़ने के लिए होता है । जैसे सुख–दु:ख, माता–पिता, पाप–पुण्य । देश–विदेश आदि।

  ☞ सबके जीवन में सुख–दु:ख आते रहते हैं।

  ☞ माता–पिता की सेवा ही सच्ची पूजा है ।

- **कोष्ठक (Bracket) ['( )'] :** किसी शब्द के अर्थ को स्पष्ट करने के लिए कोष्ठक का प्रयोग होता है ।

  जैसे – अध्ययन (पढ़ना) हर क्षेत्र में लाभ देता है।

  ☞ विरुद्धार्थी (विलोम) शब्द लिखिए।

- **अवतरण चिह्न (Inverted Commas):**

- **इकहरा : (' ') :** इकहरा अवतरण चिह्न का प्रयोग किसी के उपनाम, रचना या पुस्तक के शीर्षक आदि को उद्धृत करते समय किया जाता है,

  जैसे – ☞ 'समझदार नन्ही' पाठ के लेखक हैं – शंकर सुलतानपुरी ।

  ☞ 'सूर्यकांत त्रिपाठी' का उपनाम निराला है।

- **दुहराः (" ") :** किसी व्यक्ति के कथन को मूल रूप में उद्धृत करने के लिए दुहरे उद्धरण चिह्न का प्रयोग किया जाता है ।

  जैसे – ☞ महात्मा गांधीजी ने कहा है कि – " प्रार्थना ही आत्मा की खुराक है। "

स्वाध्याय

1. वाक्यों में उचित विराम चिह्न लगाकर सुंदर अक्षरों में लिखिए :

(1) छि छि तुमने यह क्या किया

(2) वैशाली ने मयंक से कहा घर चलो।

(3) वाह मज़ा आ गया

(4) अरे तुम नहीं गए ।

4. डॉ. होमी जहाँगीर भाभा

(संकलित)

प्रस्तुत जीवनी में भारत को अणुशक्ति सम्पन्न राष्ट्र बनाने में अपना बहुमूल्य योगदान प्रदान करने वाले राष्ट्र के महान सपूत वैज्ञानिक डॉ. होमी जहाँगीर भाभा के जीवन का लेखा-जोखा है। जिनकी बदौलत हमारे राष्ट्र को आज विश्व अणुशक्ति सम्पन्न गिने-चुने राष्ट्रों में सम्मानीय स्थान प्राप्त है।

प्रभात काल की सुन्दर बेला थी। जापान का हिरोशिमा नगर अभी रात की नींद से जागकर दिन की चहल-पहल में डूबने जा रहा था। सूरज की कोमल सुनहली धूप चारों ओर धीरे-धीरे बिखर रही थी; सुकुमार, सुन्दर बच्चे हाथ में किताबें लिए, अपने टिफिन लटकाये स्कूलों की ओर जा रहे थे, माताएँ अपने-अपने घर के काम में लगी हुई थीं; धार्मिक स्थानों में प्रार्थनाएँ चल रही थीं; हिरोशिमा का सुन्दर नगर एक फुलवारी-सा धरती पर खिला हुआ था। उसी समय सहसा प्रलय का दृश्य उपस्थित हो गया। आकाश सहस्त्रों बिजलियों की कौंध से भर उठा, एक कर्णभेदी धमाका हुआ और फिर सब ओर सफेद धुएँ के बादल पृथ्वी से लेकर आकाश तक मंडरा उठे। पल-भर में हिरोशिमा का सुन्दर नगर धूल का ढेर-मात्र रह गया। यह सब कैसे हुआ ? बच्चों, द्वितीय महायुद्ध के अन्तिम दिनों में हिरोशिमा पर यह अणुबम का विस्फोट था, जिसने कुछ, क्षणों में ही नगर की काया पलट दी थी।

विज्ञान अभिशाप भी है और वरदान भी। कोई भी वस्तु अपने उपयोग से ही भली या बुरी बन जाती है। अणु-शक्ति का उपयोग जीवन-निर्माण के लिए भी हो सकता है और आज इसी दिशा में संसार सोच भी रहा है। अणु-शक्ति का उपयोग जीवन के कल्याण के लिए किस प्रकार हो, इसी चिन्ता में एक भारतीय वैज्ञानिक भी लगा हुआ था और उसने इस दिशा में प्रशंसनीय सफलता भी पायी। इस भारतीय वैज्ञानिक का नाम डॉक्टर होमी जहाँगीर भाभा था।

डॉ. भाभा का जन्म बम्बई के एक पढ़े-लिखे धनी-मानी पारसी परिवार में 30 अक्टूबर, सन् 1909 को हुआ था। उनके पिता श्री जे. एच भाभा बम्बई के सुप्रसिद्ध बैरिस्टरों में से थे। उन्हें बचपन में नींद नहीं आती थी। वे प्राय: रोते रहते थे। इससे उनके पिता परेशान रहते थे। यह एक चिन्ता का विषय था। डॉक्टरों से सलाह ली गयी, परन्तु कोई लाभ नहीं हुआ। अन्त में एक उपाय काम में लाया गया। इनके सामने ग्रामोफोन बजाया जाने लगा। यह उपाय बहुत ही कारगर हुआ। ग्रामोफोन सुनकर उनका ध्यान बँट जाता था और उनकी रूलाई बंद रहती थी। इसका फल यह हुआ कि उन्हें संगीत से प्रेम हो गया। उनका यह संगीत-प्रेम आजीवन बना रहा। उन्हें पाश्चात्य राग-रागिनियों पर भी अच्छा अधिकार हो गया था।

उनकी प्रारम्भिक शिक्षा बम्बई में कैथेड्रल और जॉन कानन हाईस्कूलों में हुई। वे पढ़ने–लिखने में तेज थे ही। उन्होंने पन्द्रह वर्ष की आयु में ही सीनियर कैम्ब्रिज की परीक्षा उत्तीर्ण कर ली। उनके पिता जी उन्हें शिक्षा प्राप्त करने के लिए यूरोप भेजना चाहते थे, परन्तु उनकी आयु कम होने के कारण यह सम्भव नहीं हो सका। लाचार हो उन्होंने स्थानीय एलफिन्स्टन कॉलेज में प्रवेश लिया। उसके बाद उन्हे रॉयल इन्स्टिट्यूट ऑफ साइंस में दाखिल कराया गया। वहाँ से उन्होंने बम्बई विश्वविद्यालय की आई. एससी. की परीक्षा सम्मानपूर्वक प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। वे यहाँ के सबसे प्रतिभाशाली विद्यार्थियों में थे।

अब वे केम्ब्रिज के गोनविल एण्ड केयस कॉलेज में पढ़ने के लिए इंग्लैंड गए। वहाँ इंजिनियरिंग की परीक्षाएँ उत्तीर्ण कर उन्होंने अपनी असाधारण प्रतिभा का परिचय दिया। इस परीक्षा में परीक्षार्थी को 6 विशेष विषयों में से केवल तीन विषयों की परीक्षा देनी होती थी परंतु उन्होंने सभी विषयों की परीक्षा दी और सबसे उच्च अंक प्राप्त किये।

उन्हें इंजीनियरिंग के साथ–साथ गणित और भौतिक विज्ञान से भी अत्यधिक प्रेम था। इन विषयों के अध्ययन के लिए वे कैम्ब्रिज के केयस कॉलेज में सन् 1930 ई.में प्रविष्ट हुए। यहाँ उन्हें दो वर्ष के लिए विशेष छात्रवृत्ति मिल गयी। कैम्ब्रिज में पढ़ते समय ही उन्हें यूरोप के विभिन्न देशों में जाकर विद्युत् एवं चुम्बक संबंधी साधारण बातों के अतिरिक्त कॉस्मिक किरण की मौलिक खोजों के संबंध में भाषण देने का अवसर प्राप्त हुआ। इन भाषणों के फलस्वरूप इनकी ख्याति फैलने लगी। सन् 1932 में उन्हें ट्रिनिटी कॉलेज से उच्च गणित का अध्ययन करने के लिए भी एक छात्रवृत्ति मिल गयी। इससे उन्हें यूरोप के कई देशों की सैर करने का अवसर मिला। इस छात्रवृत्ति के समाप्त होने पर उन्हें सन् 1934 में तीन वर्ष के लिए सर आइजेक न्यूटन छात्रवृत्ति और उसके समाप्त होने पर सन् 1937 में तीन वर्ष के लिए एक अन्य छात्रवृत्ति दी गयी। इस बीच सन् 1941 में उन्हें कैन्टव में पीएच. डी. की उपाधि भी मिली।

इस प्रकार अपनी शिक्षा एवं अध्ययन समाप्त कर वे सन् 1940 में भारत लौट आये। उसी वर्ष वे भारतीय विज्ञान संस्थान, बेंगलौर में रीडर नियुक्त हो गए। इसके बाद वे "कॉस्मिक किरण संशोधन केन्द्र" में प्रोफेसर बनाये गये। वहाँ उन्होंने तीन वर्ष तक कार्य किया। इसी बीच सन् 1942 में उन्हें कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय का एडम्स पुरस्कार मिला और सन् 1941 में ये कास्मिक किरणों के अनुसंधान के फलस्वरूप लन्दन की रॉयल सोसायटी के फेलो चुने गये थे।

अब तक डॉ.भाभा का देश–विदेश में काफी नाम हो चुका था। विभिन्न विश्वविद्यालयों ने डी. एससी. की उपाधि प्रदान कर उन्हें सम्मानित किया। ये सन् 1951 में 'भारतीय विज्ञान काँग्रेस' के अध्यक्ष चुने गये और भारत सरकार ने सन् 1954 में उन्हें 'पद्मभूषण' की पदवी से अलंकृत किया। उसी वर्ष वे अणु–शक्ति के निर्माणकारी उपयोग के सिलसिले में जिनेवा में आयोजित आन्तर्राष्ट्रीय कान्फ्रेंस के अध्यक्ष चुने गये थे।

उनके मस्तिष्क में अणु–शक्ति को निमार्ण कार्यों में उपयोग करने की बात जमी हुई थी। उनके अनुरोध पर बम्बई में सर दोराब टाटा ट्रस्ट द्वारा "टाटा इन्स्टिट्यूट ऑफ फंडामेंटल रिसर्च "नामक संस्था की स्थापना की गयी। इसके बाद उन्होंने बंगलौर छोड़ दिया और रिसर्च संस्था से डायरेक्टर होकर बम्बई आ गए। उन्होंने

अपना सुझाव प्रस्तुत करते हुए ट्रस्ट को लिखा था– "इस संस्था को स्थापित कर मैं भौतिक विज्ञान का एक सर्वोत्कृष्ट स्कूल चलाना चाहता हूँ। मैं चाहता हूँ कि आनेवाले वर्षों में आण्विक शक्ति के कार्यों के लिए भारत को दूसरों का मुँह न ताकना पड़े।" इस संस्था से प्रतिवर्ष प्रशिक्षित वैज्ञानिक निकल रहे हैं। इसका श्रेय डॉ. भाभा को ही है। उनका भारतीय वैज्ञानिक जीवन मुख्य रूप से यहीं से प्रारम्भ हुआ।

भारत एटामिक इनर्जी ऐक्ट सन् 1948 में बना और डॉ. भाभा को अणु शक्ति कमीशन का अध्यक्ष नियुक्त किया गया। बाद में वे भारत सरकार के अणु–शक्ति विभाग के सचिव के साथ–साथ अणु–शक्ति शोध संस्थान, ट्राम्बे के संचालक का काम भी देखते थे। ट्रॉम्बे का अणु–शक्ति केन्द्र उनकी एक महान कृति है। इसके निर्माण से भारत की वैज्ञानिक प्रगति का मार्ग खुल गया। आज ट्रॉम्बे के इस संस्थान में लगभग आठ हजार वैज्ञानिक हैं, जिनमें लगभग दो हजार वैज्ञानिक एवं तकनीकी स्नातक भी शामिल हैं। आज यह केन्द्र संसार के सर्वश्रेष्ठ वैज्ञानिक संस्थानों में से एक है।

डॉ. भाभा सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक होने के साथ–साथ संगीत–प्रेमी तो थे ही, उन्हें नृत्य–कला एवं चित्र–कला में भी बचपन से ही रुचि थी। भारतीय तथा पाश्चात्य नृत्य देखने में उन्हें समान आनन्द आता था। उनके माता–पिता ही इन्हें बचपन में चित्र बनाने के लिए प्रोत्साहित किया करते थे। एक बार इन्होंने अपनी गोशाला की गाय और बछड़े का चित्र बनाया। चित्र बहुत सुन्दर था। लोंगो ने उसकी सराहना की। एक प्रसिद्ध चित्रकार ने तो उसे देखकर कहा था–"यह बालक एक दिन एक महान् कलाकार बनेगा।" उसके बाद उन्हें ड्राइंग और चित्रकला की शिक्षा दिलायी गयी। बाद में उन्होंने विदेश–भ्रमण के समय अनेक कलाकारों से भेंट की और अपनी कला को विकसित किया। इंग्लैंड के प्रसिद्ध चित्रकार ने उनकी कला को देखकर उनसे कहा था कि आप चित्र–कला को भी अपने जीवन का अंग बनाएँ। उनकी कलात्मक रुचि का ही परिणाम है कि ट्रॉम्बे के अणु–शक्ति संस्थान में बगीचा एवं पौधों की सज्जा सौन्दर्यपूर्ण एवं कलापूर्ण दिखाई देती है। टाटा इन्स्टिट्यूट की गैलरियों तथा कमरों में सजे चित्र एवं वहाँ के उपवन उनकी वैज्ञानिकता एवं कलात्मकता के सुन्दर संगम हैं।

डॉ. भाभा का जीवन अत्यन्त सरल एवं उदार था। वे सदा दूसरों को बढ़ावा देते रहते थे और उन्हें भरपूर सहायता भी। उनकी एक–मात्र इच्छा थी कि भारत विज्ञान के क्षेत्र में आगे बढ़े। अपने शिष्यों को वे यही सलाह देते थे कि वे इस दिशा में अपनी पूरी शक्ति से काम करें ।

24 फरवरी, सन् 1966 का दुर्भाग्यपूर्ण दिन। भारतीय विमान सेवा का " कंचनजंघा" नामक जेट बम्बई से जिनेवा जा रहा था। उस समय उसमें डॉ. भाभा को मिलाकर 117 यात्री थे। पश्चिमी यूरोप की सबसे ऊँची चोटी माउण्ट ब्लैक के ऊपर घना कुहरा छाया हुआ था। विमान वहीं टकराकर नष्ट हो गया और भारतीय विज्ञान–जगत् का वह जाज्वल्यमान नक्षत्र बुझ गया।

डॉ. भाभा की मृत्यु से राष्ट्र को ही नहीं, विश्व को एक महान् क्षति पहुँची। वे अब नहीं हैं, परन्तुं उन्होंने विज्ञान–जगत् को जो अमूल्य भेंट दी है, वह भावी वैज्ञानिकों के मार्ग–दर्शन के रूप में अमर रहेगी।

शब्दार्थ-टिप्पणी

बेला समय, काल **कल्याण** भलाई **प्रतिभाशाली** तेजस्वी **आजीवन** जीवनभर **उत्तीर्ण** सफल **प्रविष्ट** दाखिल **विद्युत** बिजली **ख्याति** प्रसिद्धि **उपाधि** पदवी **अनुसंधान** खोज **अनुरोध** आग्रह **सर्वोत्कृष्ट** सर्वोत्तम **श्रेय** यश **पाश्चात्य** पश्चिमी **सराहना** प्रसंशा **भ्रमण** घूमना **कोहरा** धुंध **क्षति** नुकशान, हानि **कॉस्मिक (अंग्रेजी)** ब्रह्मांडीय **इन्स्टिट्यूट (अंग्रेजी)** संस्थान **पद्मभूषण** भारत सरकार के तीन सर्वोच्च पुरस्कारों में से एक **आण्विक** अणु के विभाजन या संयोजन संबंधी

मुहावरे

काया पलट होना सम्पूर्ण परिवर्तन होना **ध्यान बँट जाना** ध्यान का दूसरी ओर हट जाना **भ्रमण करना** घूमना, सैर करना **कारगर सिद्ध होना** उपयोगी साबित होना **मुँह ताकना** निर्भर होना **प्रोत्साहित करना** उत्साह बढ़ाना

अभ्यास

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

(1) डॉ. भाभा को संगीत से प्रेम कैसे हो गया ?

(2) डॉ. भाभा के यूरोप जाकर शिक्षा प्राप्त करने में क्या रुकावट थी ?

(3) डॉ. भाभा ने सर दोराब टाटा ट्रस्ट को क्या सुझाव दिया ?

(4) डॉ. भाभा का जीवन कैसा था ?

(5) डॉ. भाभा की मृत्यु कैसे हुई ?

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

(1) पहला अणुबम किस शहर पर गिराया गया था ?

(2) डॉ. होमी जहाँगीर का जन्म कहाँ और कब हुआ था ?

(3) डॉ.भाभा को रॉयल सोसायटी ऑफ लन्दन का फेलो क्यों चुना गया ?

(4) ई. सन. 1951 में उन्हें किस संस्था का अध्यक्ष चुना गया ?

(5) भारत सरकार ने उन्हें किस पदवी से अलंकृत किया ?

(6) भारत एटॉमिक एनर्जी एक्ट कब बनाया गया ?

(7) अणुशक्ति कमीशन के प्रथम अध्यक्ष कौन थे ?

2. सूचना अनुसार लिखिए :

(1) पाठ में आये हुए 'चहल-पहल', 'धीरे-धीरे' जैसे चार-पाँच शब्दों को खोज कर लिखिए।

(2) दो वाक्यों के बीच 'और', 'परन्तु', 'फिर भी' जैसे शब्दों का प्रयोग कर एक सार्थक पैराग्राफ (परिच्छेद) लिखिए।

(3) आपने जो परिच्छेद लिखा है उसे वर्ग के समक्ष सस्वर शुद्ध उच्चारण के साथ पढ़िए।

3. निम्नलिखित शब्दों को शब्दकोश के क्रम में लिखिए :

प्रभात, सहसा, दृश्य, मस्तिष्क, लाचार, काल, नगर, वरदान, चमत्कार, राग

4. गत विज्ञान मेले के बारे में आठ-दस वाक्य लिखिए।

5. बड़े होकर आप क्या बनना चाहते हैं ? सोचिए और आठ-दस वाक्य लिखिए।

6. निम्नलिखित शब्दों के विरुद्धार्थी शब्द लिखिए :

अभिशाप	×	कोमल	×
प्रगति	×	सफलता	×
उत्तीर्ण	×	मृत्यु	×

7. निम्नलिखित शब्दों के लिए दो-दो समानार्थी शब्द लिखिए :

प्रभात	=	रात	=
सूरज	=	माता	=
आकाश	=	काया	=

8. निम्नलिखित मुहावरों के अर्थ लिखकर वाक्य में प्रयोग कीजिए :

(1) काया पलट होना
(2) ध्यान बँट जाना
(3) भ्रमण करना
(4) कारगर सिद्ध होना
(5) मुँह ताकना
(6) प्रोत्साहित करना

9. हमारे पूर्व राष्ट्रपति और महान वैज्ञानिक भारतरत्न डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम के बारे में दस वाक्य लिखिए।

प्रवृत्ति

- 'इसरो' की मुलाकात अपने माता-पिता के साथ कीजिए।।
- महान वैज्ञानिक डॉ. विक्रम साराभाई के बारे में अपने शिक्षक से जानकारी प्राप्त कीजिए।
- अपने आसपास की साइंस कॉलेज की प्रयोगशाला की मुलाकात कीजिए।

पुनरावर्तन 1

1. अपने अध्यापक की सहायता से कहानी के चित्र प्राप्त करके निम्नलिखित प्रवृत्ति कीजिए :

(1) चित्रों को योग्य क्रम में रखिए।

(2) क्रमानुसार रखे गए चित्रों के आधार पर संबंधित कहानी के कुछ वाक्य बनाइए।

(3) वाक्यों से कहानी बनाइए।

(4) स्वलिखित कहानी का पठन कीजिए।

2. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ देकर वाक्य में प्रयोग कीजिए :

उदाहरण : और – तथा, एवम् • राम और लक्ष्मण वन गए।

ओर – तरफ • भरत वन की ओर गए।

(1)	चिर –	चीर	(2)	जाति –	जाती
(3)	शिला –	शीला	(4)	दिन –	दीन
(5)	दिया –	दीया			

3. निम्नलिखित मुद्दों के आधार पर कहानी बनाइए :

दो मित्र – संकट में सहायता का वचन – जंगल में जाना – भालू का आना – एक का पेड़ पर चढ़ना– दूसरे का जमीन पर लेटना – भालू का पास आना – कान सूँघना – चले जाना – दूसेर मित्र का पेड़ से उतरना – पूछना – "भालू ने कान में क्या कहा ?" दूसरे मित्र का उत्तर – "स्वार्थी मित्रों से दूर रहो"।

4. हमारे दैनिक व्यवहार में उपयोग में लिए जानेवाले अंग्रेजी शब्दों की सूची बनाकर वाक्य में प्रयोग कीजिए :

उदाहरण : डॉक्टर

वाक्य: मीना को तेज बुखार होने से उसकी माँ उसे डॉक्टर के पास ले गई।

5. अपनी दिनचर्या लिखिए।

6. किन्ही दो महान व्यक्तियों के सुंदर विचारों की उक्तियों की सूची बनाइए ।

उदाहरण : स्वामी विवेकानंद:– "उठो जागो और ध्येयप्राप्ति के लिए लगे रहो।"

7. अपने मनपसंद, वैज्ञानिक, समाजसेवक, या खिलाड़ी पर पाँच-सात वाक्य लिखिए ।

8. निम्नलिखित शब्द जैसे अन्य शब्द खोजकर वाक्य में प्रयोग कीजिए।

उदाहरण : ऊँच-नीच

9. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

(1) हमें शिवाजी के चरित्र से क्या शिक्षा मिलती है ?

(2) हमें सज्जन की संगति क्यों करनी चाहिए ?

(3) डॉ. होमी जहाँगीर भाभा को रॉयल सोसायटी ऑफ लंदन का सदस्य (फेलो) क्यों चुना गया ?

(4) "दुनिया काँच के महल जैसी है" समझाइए।

10. निम्नलिखित शब्दों को शब्दकोश के क्रम में लिखिए :

प्रभात, सहसा, दृश्य, मस्तिष्क, लाचार, काल, नगर, वरदान, चमत्कार, राग

5. बादल जी

– शंभुनाथ तिवारी

(जन्म : 11 जुलाई, 1962)

डॉ. शंभुनाथ तिवारी का जन्म गोरखपुर (उ. प्र.) के गोहुअना गाँव में हुआ। इन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से बी. ए. और जामिया मिलिया विश्वविद्यालय से एम. ए. (हिन्दी) की परीक्षा स्वर्ण पदक के साथ उत्तीर्ण की। प्रोफेसर नामवर सिंह के निर्देशन में जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय से एम. फिल और पीएच. डी. की उपाधि प्राप्त की इनकी कृतियों में मिश्रबन्धु और हिन्दी आलोचना (समीक्षा ग्रंथ) मेघदूत के काव्यानुवाद (समीक्षा ग्रंथ) हैं। हिन्दी व उर्दू की अनेक साहित्यिक पत्रिकाओं में लेख व्यंग्य, कविता, गीत, गजलें प्रकाशित हुई हैं। देश की अधिकांश बाल पत्रिकाओं में उनकी निरन्तर रचनाएँ प्रकाशित होती हैं। आप राजस्थान उर्दू अकादमी के मनोनीत सदस्य हैं। बादलजी कविता "धरती पर चाँद" नामक काव्य संग्रह में संकलित है। इसमें गरमी से अकुलाए बालक का बादल से वर्षा लाने का निवेदन है। प्रकृति के साथ बालमन का तादात्म्य सरल और सहज रूप से इस कविता में दिखाई देता है

गरमी से राहत की कुछ,
तरकीब सुझाओ, बादल जी!

हम लोगों की इस हालत पर,
तरस दिखाओ, बादल जी!

आते खेल-कबड्डी करते,
पाल्हा छूकर चल देते।

ऐसा आना भी क्या आना,
तुम्हीं बताओ, बादल जी!

इतना इंतजार करवाना
ठीक नहीं होता प्यारे।

जैसा नाम तुम्हारा वैसा,
काम दिखाओ, बादल जी!

बच्चे कहते हाथ जोड़कर,
मेघा–मेघा पानी दे!

इनकी बात मान लो, इनको,
नहीं सताओ, बादल जी!

नदिया, ताल–तलैया, प्यासे
प्यासा–प्यासा सागर भी।

आकर अब तो इन लोगों की,
प्यास बुझाओ, बादल जी!

सारा समय गुज़र जाता है,
पानी–पानी ढोने में।

जितना ले जाते हो उतना,
तो लौटाओ, बादल जी!

शब्दार्थ–टिप्पणी

राहत मुक्ति, छुटकारा **तरकीब** तरीका, युक्ति **पाल्हा** कबड्डी के खेल की सीमा–रेखा **तलैया** छोटा तालाब, पोखार **ढोना** उठाना, वहन करना

मुहावरे

तरस दिखाना दया करना **हाथ जोड़कर कहना** निवेदन करना

अभ्यास

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

(1) कविता में बादल जी से क्या निवेदन किया गया है?

(2) बच्चे हाथ जोड़कर क्या कह रहे हैं?

(3) वर्षाऋतु के कितने महीने होते हैं? उनके नाम लिखिए।

(4) बादल को कैसा काम दिखाने के लिए कहा गया है?

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्यों में लिखिए :

(1) बादल लोगों की हालत पर कैसे तरस खाएगा ?

(2) कवि बादल से क्या अपेक्षा करता है ?

(3) कवि बादल से क्या लौटाने की बात करता है ?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तारपूर्वक लिखिए :

(1) 'पाल्हा छूकर चल देते' पंक्ति का आशय क्या है ?

(2) 'सारा समय गुजर जाता है, पानी–पानी ढोने में' इस पंक्ति के द्वारा किस समस्या की ओर संकेत किया गया है ?

3. इस कविता का सारांश अपने शब्दों में लिखिए :

4. निम्नलिखित शब्दों का वाक्य प्रयोग कीजिए :

तरकीब, तरस, इन्तजार, प्यास, सागर

5. निम्नलिखित शब्दों के समानार्थी शब्द लिखिए :

बादल, ताल, सागर, पानी, हालत

प्रवृत्ति

- पर्यावरण में बादल के महत्त्व की जानकारी प्राप्त कीजिए।
- प्रकृति के अन्य तत्त्वों का परिचय प्राप्त कीजिए।
- कविता का सस्वर गान कीजिए।
- प्रकृति संबंधी अन्य गीतों का संग्रह कीजिए।

6. समुद्र खारा क्यों ?

– हंसराज रहबर

(जन्म : सन् 1914)

परिश्रमी जनता के प्रति गहरी आस्था रखने वाले क्रान्तिकारी विचारधारा के समर्थक और चिंतक हंसराज रहबर हिन्दी साहित्य-जगत में अनुवादक, कहानीकार, उपन्यासकार तथा समीक्षक के रूप में प्रसिद्ध हैं। 'आँके-बाँके', 'कंकड़', 'संकल्प' आपके प्रसिद्ध उपन्यास हैं। 'उपहास', 'नव-क्षितिज', 'हमलोग' कहानी संग्रह हैं। 'मेरे सात जन्म' आपकी संघर्षशील आत्मकथा है।

विश्व की प्रत्येक भाषा में लोककथाएँ प्रचलित होती हैं, जो देश की सांस्कृतिक परम्परा की संवाहक होती हैं। ये लोक-विश्वास, लोक मान्यताओं को निरूपित करती हैं। प्रस्तुत लोककथा जापान की है। समुद्र का पानी नमकीन क्यों होता है, इसके पीछे क्या लोक-विश्वास है, यह इस कथा का विषय है।

बहुत दिनों की बात है कि एक गाँव में दो भाई रहते थे। बड़े भाई के पास बहुत-सा धन था, मगर छोटा कंगाल था। एक बार जब लोग नव-वर्ष की खुशियाँ मना रहे थे, तब छोटे भाई के पास खाने को भी कुछ न था। वह बड़े भाई के पास गया और उसने उससे थोड़ा-सा चावल उधार माँगा, लेकिन उसने देने से इन्कार कर दिया। जब वह भाई के घर से उदास और खिन्न-मन लौट रहा था, तो उसे एक बूढ़ा रास्ते में मिला। उस बूढ़े के सिर पर लकड़ियों का एक भारी गट्ठा था। बूढ़े ने उससे पूछा, "तुम इतने उदास क्यों हो ? किस मुसीबत में पड़े हो ?"

छोटे भाई ने अपनी दुख-भरी कहानी उसे सुनाई। बूढ़े ने उसे धैर्य बँधाते हुए कहा, "अगर तुम लकड़ियों का यह गट्ठा मेरे घर तक पहुँचा दो, तो तुम्हें ऐसी वस्तु दूँगा, जिसकी सहायता से तुम मालामाल हो जाओगे।"

छोटे भाई ने तुरंत लकड़ियों का गट्ठा बूढ़े से लिया और वह उसके पीछे- पीछे चल पड़ा।

घर पहुँचकर बूढ़े ने उसे एक मालपुआ दिया और कहा, "तुम इसे लेकर मंदिर के पीछेवाले जंगल में चले जाओ। वहाँ तुम्हें एक गुफा दिखाई देगी, जिसमें बहुत-से बौने रहते हैं। मालपुआ उनका मनभाता खाना है। वे किसी भी मूल्य पर इसे प्राप्त करना चाहेंगे। तुम उनसे धन-दौलत बिल्कुल न माँगना, बल्कि कहना कि मुझे पत्थर की एक चक्की दे दो। जब तुम चक्की ले आओगे, तो उसका विशेष गुण मैं तुम्हें बता दूँगा।"

छोटा भाई मंदिर की ओर चल पड़ा और थोड़ी देर में जंगल में आ पहुँचा। उसने देखा कि मंदिर से थोड़ी ही दूर एक गुफा से बहुत – से बौने निकलते हैं और फिर उसी में चले जाते हैं। उस समय वे पेड़ की एक बड़ी टहनी को खींचकर गुफा के भीतर ले जाने का प्रयत्न कर रहे थे। उनके लिए यह काम बहुत ही कठिन था।

छोटा भाई उनके पास जाकर बोला, "लाओ, इस टहनी को मैं ले चलूँ।" जब वह टहनी को कंधे पर उठाए हुए गुफा के निकट पहुँचा, तो उसके कान में एक महीन आवाज़ पड़ी, 'मुझे बचाओ !' छोटे भाई ने घबराकर इधर-उधर देखा 'उसके पाँव के नीचे एक बौना पिस चला था। छोटे भाई ने उस बौने को झपटकर उठा लिया। असल में वह बौनों का राजकुमार था।

बौने राजकुमार ने छोटे भाई के मालपुए को देख लिया। वह बोला, "भाई यह मालपुआ मुझे दे दो। तुम्हारी बड़ी कृपा होगी। उसके ऐवज में तुमको मैं बहुत-से हीरे-जवाहरात दूँगा।" छोटे भाई को बूढ़े की बात याद थी। उसने मालपुआ बौने राजकुमार को दे दिया और उसके बदले पत्थर की एक चक्की माँगी। बौनों के राजा ने अपने बेटे की खुशी के खातिर चक्की देना स्वीकार कर लिया। जब छोटा भाई चक्की लेकर चलने लगा तो राजा बोला, "देखो, इसे साधारण चक्की मत समझना, यह हमारे राज्य की सबसे कीमती वस्तु है। इस चक्की को दाईं ओर घुमाने से तुम जो चीज माँगोगे, मिल जाएगी और जब तक तुम इसे फिर बाईं ओर नहीं घुमाओगे, वह चीज निकलती ही रहेगी।"

अब छोटा भाई पत्थर की चक्की लेकर घर आया। उसकी पत्नी भूखी-प्यासी बैठी पति के लौटने का इंतजार कर रही थी। वह उसे पत्थर की चक्की उठाए आते देखकर अत्यंत निराश हुई । लेकिन पति ने आते ही कहा, "जल्दी से भीतर जाकर एक कपड़ा बिछा दो।"

पत्नी ने कमरे के भीतर एक सफेद कपड़ा बिछा दिया। छोटे भाई ने चक्की को उसपर रखा और तुरंत दाईं ओर घुमाते हुए कहा, "चावल निकालो।" कहने की देर थी कि चावलों का ढेर लग गया। फिर उसने मछली माँगी, तो मछलियाँ मिल गई। इसके बाद उसने एक-एक करके आवश्यकता की सभी चीजें प्राप्त कर लीं.।

छोटे भाई ने सोचा कि अब तो मैं धनवान बन गया हूँ। मुझे एक शानदार मकान में रहना चाहिए। उसने चक्की को दाईं ओर घुमाकर पहले एक सुंदर महल तैयार करवाया और फिर उसे बढ़िया सामान से सजवा लिया। अब वह ठाट से रहने लगा। एक दिन उसने अपने पड़ोसियों और मित्रों को दावत दी और नए साल का त्योहार धूमधाम से मनाया।

छोटे भाई के ये ठाट और राग-रंग देखकर बड़ा भाई सोचने लगा कि कल तक तो यह महा दरिद्र था; आज इतना बड़ा आदमी और लखपति कैसे बन गया ? इसमें अवश्य कोई भेद है। वह एक दिन छिप-छिपकर उसके घर के भीतर आया और किवाड़ की ओट में खड़ा हो गया। देखता क्या है कि उसका भाई एक चक्की को घुमाकर मिठाई के टोकरे भर रहा है। यह देखकर वह चकित रह गया और बाहर निकलकर इस चक्की को प्राप्त करने का उपाय सोचने लगा।

उसी रात जब सब लोग सो गए, तो बड़ा भाई चोरों की भाँति दबे पाँव छोटे भाई के घर में घुसा और पत्थर की चक्की उठाकर भाग गया।

उसने सोचा कि अब मैं किसी टापू में जाकर रहूँगा और इस चक्की की सहायता से लखपति बन जाऊँगा। यह सोचकर वह समुद्र के किनारे आया और चक्की साथ लेकर एक नाव में जा बैठा। घर से चलते समय उसने सब आवश्यक वस्तुएँ साथ ले ली थीं, लेकिन नमक लाना भूल गया था। नाव में बैठते ही उसने पहला-काम यह किया कि नमक प्राप्त करने के लिए उसने चक्की को घुमाना शुरु किया और "नमक निकाल, नमक निकाल" की रट लगा दी।

कहने की देर थी कि नमक निकलना शुरू हो गया। अब मुसीबत यह थी कि बड़े भाई को चक्की रोकने का ढंग नही आता था। इसका परिणाम यह हुआ कि नाव में नमक का ढेर लग जाने के कारण बड़ा भाई चक्की-समेत समुद्र में डूब गया।

लोगों का कहना है कि चक्की अब भी घूम रही है। और नमक बराबर निकल रहा है। इसलिए समुद्र का पानी खारा है।

शब्दार्थ-टिप्पणी

कंगाल गरीब, धनहीन **खिन्न** उदास, दु:खी **बौना** छोटे कद का **ऐवज** बदले में **ओट** पीछे **धैर्य** धीरज **भेद** रहस्य, गुप्त बात

मुहावरे

चकित रह जाना आश्चर्य करना **दबे पाँव आना** छिपकर आना, चुपचाप आना

अभ्यास

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य में दीजिए :

(1) छोटे भाई की उदासी का क्या कारण था ?

(2) बौनों का मनपसंद भोजन क्या था ?

(3) छोटे भाई के सामने बूढ़े ने क्या शर्त रखी ?

(4) छोटे भाई की पत्नी निराश क्यों हो गयी ?

(5) बड़े भाई ने नाव में ही चक्की को घुमाना क्यों प्रारम्भ कर दिया ?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्यों में दीजिए :

(1) छोटा भाई बड़े भाई के पास क्यों गया था ?

(2) छोटा भाई धनवान कैसे बन गया ?

(3) बौनों के राजा ने चक्की देना क्यों स्वीकार किया ?

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार-पूर्वक लिखिए :

(1) बूढ़े ने छोटे भाई को क्या सलाह दी ? क्यों ?

(2) बड़े भाई की शंका का क्या कारण था ?

(3) समुद्र खारा होने के बारे में लोगों की क्या मान्यता है ?

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

(1) छोटा भाई पत्थर की __________ लेकर घर आया।

(2) बड़े भाई को चक्की रोकने का __________ नहीं आता था।

(3) लोगों का कहना है कि चक्की अभी भी __________ रही है।

3. निम्नलिखित शब्दों के विरोधी शब्द लिखिए :

उदास, भीतर, निकट, साधारण

4. निम्नलिखित शब्दों के समानार्थी शब्द लिखिए :

पत्थर, सुन्दर, दरिद्र, किवाड़, चकित

5. निम्नलिखित कथन सही हैं या गलत ? बताइए :

(1) छोटा भाई मालदार था।

(2) 'चावल निकालो' यह कथन बड़े भाई का है।

(3) बड़ा भाई किवाड़ के सामने खड़ा रहा।

(4) बड़े भाई को चक्की रोकने का ढंग आता था।

प्रवृत्ति

- अन्य भाषाओं की लोककथाओं का पठन कीजिए।
- लोकगीत, लोकसंगीत की जानकारी प्राप्त कीजिए।
- अपने क्षेत्र की लोककथाओं का संग्रह कीजिए।

7. वह देश कौन-सा है ?

रामनरेश त्रिपाठी

(जन्म : सन् 1881 निधन : सन् 1962)

श्री राम नरेश त्रिपाठी का जन्म उत्तर प्रदेश राज्य के कोदूलीपुर गाँव में हुआ था । अपने काव्यों द्वारा आपने राष्ट्रीय चेतना जागृत करके देशप्रेम और राष्ट्रीयता की अनुभूतियों को व्यक्त किया है। 'मिलन', 'पथिक', 'मानसी' और 'स्वप्न' आप की कविताओं के संग्रह हैं ।

प्रस्तुत काव्य में भारत देश की महिमा गायी गई है। कवि ने अपने देश को अनूठा दर्शाते हुए उसकी भौगोलिक स्थिति एवं सांस्कृतिक विरासत का गान किया है । भारत देश विश्व में किस प्रकार महान है यह बात कवि ने बड़ी खूबी से कही है।

मन-मोहिनी प्रकृति की गोद में जो बसा है।
सुख-स्वर्ग-सा जहाँ है वह देश कौन-सा है ?
जिसका चरण निरंतर रतनेश धो रहा है ।
जिसका मुकुट हिमालय वह देश कौन-सा है ?
नदियाँ जहाँ सुधा की धारा बहा रही हैं।
सींचा हुआ सलोना वह देश कौन-सा है ?
जिसके बड़े रसीले फल, कंद, नाज, मेवे।
सब अंग में सजे हैं, वह देश कौन-सा है ?
जिसमें सुगंध वाले सुंदर प्रसून प्यारे।
दिन रात हँस रहे हैं वह देश कौन-सा है ?
मैदान, गिरि, वनों में हरियालियाँ लहकती ।
आनंदमय जहाँ है वह देश कौन-सा है ?
जिसकी अनंत धन से धरती भरी पड़ी है।
संसार का शिरोमणि वह देश कौन-सा है ?
सबसे प्रथम जगत में जो सभ्य था यशस्वी ।
जगदीश का दुलारा वह देश कौन-सा है ?
जिसमें हुए अलौकिक तत्वज्ञ ब्रह्मज्ञानी।
गौतम, कपिल, पतंजलि, वह देश कौन-सा है ?
छोड़ा स्वराज तृणवत आदेश से पिता के।
वह राम थे जहाँ पर वह देश कौन-सा है ?

निस्वार्थ शुद्ध प्रेमी भाई भले जहाँ थे ।
लक्ष्मण–भरत सरीखे वह देश कौन – सा है ?
विद्वान, वीर, योगी, गुरु राजनीतिकों के।
श्रीकृष्ण थे जहाँ पर वह देश कौन–सा है ?
विजयी, बली जहाँ के बेजोड़ शूरमा थे ।
गुरु द्रोण, भीम, अर्जुन वह देश कौन–सा है ?
जिसमें दधीचि दानी हरिचंद कर्ण से थे ।
सब लोक का हितैषी वह देश कौन–सा है ?
वाल्मीकि, व्यास ऐसे जिसमें महान कवि थे ।
श्री कालिदास वाला वह देश कौन–सा है ?
निष्पक्ष न्यायकारी जन जो पढ़े लिखे हैं ?
वे सब बता सकेंगे वह देश कौन–सा है ?

शब्दार्थ टिप्पणी

मनमोहिनी मन को मोहित करनेवाली **रतनेश** समुद्र (रत्नों का स्वामी) **सलोना** सुंदर **शिरोमणि** श्रेष्ठ, सर्वोत्तम **यशस्वी** कीर्तिमान, जिसका यश बहुत फैला हो **अलौकिक** दिव्य **तृणवत्** तिनके के समान **शूरमा** वीर, योद्धा **हितैषी** भला चाहनेवाला **दूजा** दूसरा **निष्पक्ष** पक्षपात, रहित **सुधा** अमृत **अनंत** अंतहीन **बेजोड़** अद्भुत, जिसके समान और कोई न हो

अभ्यास

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

(1) कवि ने संसार का शिरोमणि किसे कहा है ?

(2) भारत का मुकुट किसे बताया गया है ?

(3) कवि ने इस काव्य में किन शूरमाओं की बात की है ?

(4) कविता में किन-किन महान कवियों का उल्लेख हुआ है ?

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

(1) कवि ने अपने देश को संसार का शिरोमणि क्यों बताया है ?

(2) प्रकृति के किन तत्त्वों को लेकर कवि ने देश को आनंदमय बताया है ?

(3) किन विभूतियों से हमारा देश महान बना है ?

2. निम्नलिखित काव्य पंक्तियाँ पूर्ण कीजिए:

(1) जिसकी अनंत ________________________________ कौन-सा है ?

(2) विद्वान, वीर ________________________________ कौन-सा है ?

(3) मैदान, गिरि ________________________________ कौन-सा है ?

3. निम्नलिखित शब्दों के दो-दो समानार्थी शब्द लिखिए :

(1) मुकुट (2) प्रसून

(3) गिरि (4) वन

4. निम्नलिखित शब्दों के विरोधी शब्द लिखिए :

शिक्षित, नि:स्वार्थ, प्रेम, वीर

5. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ देकर वाक्यों में प्रयोग कीजिए :

बेजोड़, निष्पक्ष, हितैषी, निरंतर, शिरोमणि

6. निम्नलिखित शब्दों की वर्तनी सुधारकर फिर से लिखिए :

मूकूट, हीतेषि, शीक्षीत, मोहीनी, गीरी, उचीत

7. उचित जोड़ बनाने के लिए ☐ में सही अंक लिखिए :

(1) दानी	कालिदास	☐
(2) सत्यवादी	गौतम	☐
(3) महान कवि	राम	☐
(4) अलौकिक तत्वज्ञानी	कर्ण	☐
(5) आज्ञाकारी	हरिश्चन्द्र	☐

प्रवृत्ति

- देशभक्ति पर आधारित दो गीत कंठस्थ कीजिए ।
- कविता में दर्शाये गए ऋषिमुनियों के अतिरिक्त दो ऋषिमुनियों के विषय में जानकारी प्राप्त करके प्रत्येक के बारे में दस-दस वाक्य लिखिए ।
- रामायण एवं महाभारत की कथावस्तु प्रस्तुत करनेवाली सी.डी. लाकर कक्षा में उचित्त अवसर पर दिखाइए।

भाषा-सज्जता

कक्षा पाँचवीं में हम संज्ञा के बारे में सीख चुके हैं ।जो शब्द किसी व्यक्ति, जाति, वस्तु, पदार्थ, द्रव्य-भाव और समूह का बोध कराते हैं, उन्हें संज्ञा कहते हैं ।

आइये अब हम संज्ञा के विषय में अधिक जानकारी प्राप्त करें ।

निम्नलिखित वाक्यों को ध्यानपूर्वक पढ़िए ।

(1) यह पेड़ बहुत घना है, धूप भी नहीं लगेगी ।

(2) सुमित और करण दरी बिछाते हैं ।

(3) मीनू पहले तो हमें चूल्हा तैयार करना है ।

(4) मुझ पर प्रहार मत करो, दर्द होता है।

(5) सर ने पढ़ाया था कि पेड़ - पौधों में भी जान होती है ।

(6) उस दर्द में हमें सुख की अनुभूति होती है ।

(7) बच्चों हमारा तो जन्म ही परोपकार के लिए होता है ।

(8) गरमी में शीतल छाया और बरसात में छाते का काम करता हूँ ।

(9) जरा से पैसों के लालच में वह हरे–भरे पेड़ों को काट डालता है ।

(10) वर्षा कम होगी अनाज कम होगा ।

उपर्युक्त वाक्यों में काले टाइप से छपे हुए शब्दों को ध्यानपूर्वक पढ़ने से आपको यह पता चल गया होगा कि पेड़, धुप, सुमित, करण, दरी, चूल्हा, प्रहार, दर्द, सर, पेड़, पौधे, जान, सुख, बच्चे, जन्म, परोपकार, गरमी, छाया, बरसात, छाता, पैसा, लालच, वर्षा, अनाज, ये शब्द व्यक्ति वस्तु, जाति, पदार्थ, भाव के नाम हैं । अब आप समझ गये होंगे कि किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान, पदार्थ, जाति, भाव और समूह के नाम को संज्ञा कहते हैं।

स्मरण रखें –

(1) जिस शब्द से किसी एक वस्तु या व्यक्ति का बोध हो उसे व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं । जैसे – सुमित, भारत, गंगा, गाँधीनगर आदि।

(2) जिन संज्ञाओं से एक ही प्रकार की वस्तुओं या व्यक्तियों का बोध हो उन्हें जातिवाचक संज्ञा कहते हैं।
जैसे – लड़के, पेड़, जंगल, मकान, दरी आदि।

(3) जिस संज्ञा शब्द से व्यक्ति या वस्तु के गुण, धर्म, दशा, या व्यापार आदि का बोध होता है उसे भाववाचक संज्ञा कहते हैं ।
जैसे – दर्द, परोपकार, गरमी, लालच, ममता आदि।

(4) जिस संज्ञा से वस्तु अथवा व्यक्ति के समूह का बोध हो उसे समूहवाचक संज्ञा कहते हैं ।
जैसे – सेना, जुलूस, सभा, दल।

(5) जिस संज्ञा से नाप तोल वाली वस्तु या पदार्थ का बोध हो उसे द्रव्यवाचक संज्ञा कहते हैं ।
जैसे – अनाज, दूध, पानी, चाँदी, लोहा आदि।

स्वाध्याय

नीचे दी गई प्रत्येक संज्ञा का प्रकार लिखकर उसे वाक्य में प्रयुक्त कीजिए :

गंगा, जापान, शिक्षक, मित्र, मकान, बचपन, सोना, तेल, सभा, होली, पटना, घोड़ा, पुस्तक, चतुराई, हिमालय आदि।

उदाहरण :

गंगा–व्यक्तिवाचक संज्ञा

वाक्य : गंगा हिमालय से निकलती है ।

8. नपा-तुला धुआँ

(संकलित)

तेनालीराम की चातुर्य कथाएँ बच्चों में अधिक प्रिय हैं। यहाँ एक चातुर्य प्रकट करनेवाली कथा प्रस्तुत है, जिसमें तेनालीराम से ईर्ष्या रखनेवाले दरबारी राजा से अपना महत्त्व बढ़ाने के लिए तथा तेनालीराम को नीचा दिखाने के लिए योजना बनाते हैं, राजा धुएँ को नापने की बात करते हैं। सभी दरबारी अपनी क्षमता से बाहर होने की बात बताते हैं तभी तेनालीराम अपनी चतुराई दर्शाकर अपना सिक्का जमा देते हैं। ऐसी रोचक कथा छात्रों को पसंद आएगी।

एक समय राजा कृष्णदेव राय का दरबार लगा हुआ था।

उस समय महाराज दरबारियों के साथ चर्चा में व्यस्त थे कि अचानक चतुर और चतुराई पर चर्चा चल पड़ी। महाराज के अधिकांश मंत्री और यहाँ तक कि राजगुरु भी तेनालीराम से जलते थे। महाराज के समक्ष अपने दिल की बात रखने का अच्छा मौका था, अत: एक मंत्री बोले- "महाराज! आपके दरबार में चतुर लोगों की कमी नहीं है, यदि मौका मिले तो यह बात सिद्ध हो सकती है, मगर.... ।"

"मगर क्या मंत्रीजी ?" महाराज ने उत्सुकता से पूछा।

"मैं बताता हूँ महाराज! " सेनापति अपने स्थान से उठकर बोला- "मंत्रीजी कहना चाहते हैं कि तेनालीराम के सामने किसी को अपनी योग्यता सिद्ध करने का अवसर ही नहीं मिलता-हर मामले में तेनालीराम अपनी टाँग अड़ा देते हैं और चतुराई का सारा श्रेय स्वयं ले जाते हैं। अन्नदाता! जब तक दूसरे लोगों को अवसर नहीं मिलेगा, वे अपनी योग्यता भला कैसे सिद्ध करेंगे ?"

महाराज गम्भीर हो गए। समझ गए कि सभी दरबारी तेनालीराम के विरुद्ध हैं।

कुछ क्षणों तक वे कुछ सोचते रहे। अचानक ही उनकी दृष्टि एक कोने में ठाकुरजी की प्रतिमा के सामने जलती धूप पर स्थिर हो गई और तुरन्त ही उन्हें दरबारियों की परीक्षा लेने का उपाय सूझ गया। वे बोले–"आप लोगों को अपनी योग्यता सिद्ध करने का अवसर अवश्य दिया जाएगा, तेनालीराम बीच में नहीं आएँगे।"

"ठीक है महाराज!" सभी दरबारी प्रसन्न हुए – "कहिए! हम क्या करें ?"

"मुझे इस धूपबत्ती का दो हाथ धुआँ चाहिए।" महाराज ने कोने में जलती धूपबत्ती की ओर संकेत करके कहा–"जो भी दरबारी यह कार्य करेगा, उसे तेनालीराम से भी चतुर समझा जाएगा।"

राजा का प्रश्न सुनकर सभी दरबारी सिटपिटा गए। यह कैसी मुर्खतापूर्ण परीक्षा है, भला धुआँ भी कहीं नापा जाता है ? मगर कोई–न–कोई युक्ति तो लगानी ही थी। कई दरबारियों ने हाथ से धुआँ नापने की कोशिश की, किन्तु धुआँ भला कैसे नपता ? वह तो ऊपर उठता और बलखाए साँप की तरह इधर–उधर लहरा जाता।

सुबह से शाम हो गई, मगर कोई भी दरबारी धुआँ न नाप सका। महाराज कृष्णदेव राय मंद–मंद मुस्करा रहे थे। जब सभी दरबारी थक–हारकर बैठ गए तो एक दरबारी बोला–"महाराज! धुएँ को नापना हमारी दृष्टि में तो असम्भव है; हाँ, यदि तेनालीराम इस कार्य को कर देगा तो हम उसे अपने से चतुर मान लेंगे। मगर यदि वह भी न नाप सका तो आप उसे हमारे समान ही समझें और अधिक मान–सम्मान न दें।"

महाराज कृष्णदेव ने मुस्काराते हुए तेनालीराम की तरफ देखा–"क्यों तेनालीराम! क्या तुम्हें दरबारियों की चुनौती स्वीकार है ?"

"मैं भी कोशिश ही कर सकता हूँ अन्नदाता!" तेनालीराम अपने स्थान से उठकर विनम्रता से सिर झुकाकर बोला– "मैंने सदा आपके आदेश का पालन किया है, इस बार भी करूँगा।"

तेनालीराम ने एक सेवक को अपने करीब बुलाकर उसके कान में कुछ कहा। सेवक तत्काल वहाँ से चला गया। दरबार में सन्नाटा छाया रहा। सभी उत्सुक थे कि देखें तो तेनालीराम कैसे धुएँ को नापकर राजा को दो हाथ धुआँ सौंपता है ?

तभी सेवक शीशे की दो हाथ लम्बी एक नली लेकर दरबार में हाजिर हुआ। तेनालीराम ने धूपबत्ती से उठते धुएँ पर उस नली का मुँह लगा दिया। धुआँ नली में भरने लगा। कुछ ही देर में पूरी नली धुएँ से भर गई। तेनालीराम ने कपड़ा ठुँसकर नली का मुँह बन्द कर दिया, फिर उसे महाराज की ओर बढ़ाकर बोला– "लो महाराज! दो हाथ नपा–तुला धुआँ।"

महाराज ने मंद–मंद मुस्काराते हुए नली ले ली, फिर दरबारियों की ओर देखा, सभी के सिर झुके हुए थे। कुछ दरबारी, जो तेनालीराम से नफरत नहीं करते थे, आँखो में प्रशंसा के भार लिये तेनालीराम को देख रहे थे।

महाराज बोले – "अब तो आप लोग मान गए कि तेनालीराम वास्तव में बुद्धिमान हैं और इनका मुकाबला कोई नहीं कर सकता ?"

दरबारी भला इसके बाद क्या जवाब देते।

शब्दार्थ-टिप्पणी

व्यस्त काम में लगा हुआ **समक्ष** सामने, सम्मुख **मौका** अवसर **चतुर** चालाक **श्रेय** यश **संकेत** इशारा **कोशिश** प्रयास **मुकाबला** स्पर्धा **उत्सुकता** कुतुहल **विरुद्ध** खिलाफ

मुहावरे

टाँग अड़ाना विघ्न डालना, हस्तक्षेप करना **उपाय सूझना** हल मिलना **सिटपिटाना** सकपका जाना

अभ्यास

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

(1) तेनालीराम के सामने किन्हें अपनी योग्यता सिद्ध करने का अवसर नहीं मिलता था ?

(2) चतुराई का सारा श्रेय कौन ले जाता था ?

(3) महाराज ने दरबारियों को कौन-सा काम सौंपा ?

(4) तेनालीराम ने धुआँ नापने के लिए कौन-सी तरकीब आजमाई ?

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

(1) तेनालीराम से कौन-कौन ईर्ष्या करते थे ?

(2) धूपबत्ती कहाँ जल रही थी ?

(3) महाराज को दरबारियों की परीक्षा लेने का क्या उपाय सूझा ?

(4) महाराज को कितना धुआँ चाहिए था ?

(5) तेनालीराम ने सेवक के कान में क्या कहा होगा ?

(6) धुआँ नापने पर दरबारियों पर क्या असर हुआ ?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार से लिखिए :

(1) दरबारियों ने धुएँ को कैसे नापने का प्रयास किया ?

(2) तेनालीराम अपनी किस विशेषता के लिए प्रसिद्ध थे ?

(3) इस चातुर्यकथा से आपको क्या बोध मिलता है ?

3. निम्नलिखित शब्दों के समानार्थी शब्द दीजिए :

योग्यता, सेनापति, कोशिश, हाजिर, श्रेय, मौका

4. निम्नलिखित शब्दों के विरुद्धार्थी शब्द दीजिए :

चतुर, प्रसन्न, नफरत, सम्मान, असंभव

5. निम्नलिखित शब्दों से भाववाचक संज्ञा बनाइए :

चतुर, उत्सुक, योग्य, प्रसन्न, विनम्र, मूर्ख

प्रवृत्ति

- तेनालीराम की अन्य कथाएँ पढ़िए।
- अकबर बीरबल की चातुर्य कथाओं का संग्रह करके हस्तलिखित कथा संग्रह बनाइए।
- चाचा चौधरी की कथाएँ कक्षा में सुनाइए।
- कहानी कथन की प्रतियोगिता आयोजित कीजिए।

9. आप भले तो जग भला

श्रीमन्नारायण

(जन्मः सन् 1912)

श्रीमन्नारायण का जन्म इटावा–उत्तरप्रदेश में हुआ था। इनकी शिक्षा कोलकाता तथा प्रयाग विश्वविद्यालय में सम्पन्न हुई। इन्हें गाँधीजी के आर्थिक सिद्धातों का विशेषज्ञ माना जाता है। आप भारत–सरकार के योजना आयोग के सदस्य एवं गुजरात प्रांत के राज्यपाल भी रह चुके हैं। आपकी प्रमुख रचनाएँ 'रोटी का राग' एवं 'मानव' हैं।

इस पाठ में लेखक ने कहा है कि हमें केवल अपने से ही सन्तुष्ट नहीं होना चाहिए। हमें दूसरों के विचारों का भी सम्मान करना चाहिए। यदि हम दूसरों के साथ अच्छा व्यवहार करेंगे तो वे भी हमारे साथ अच्छा व्यवहार करेंगे।

एक विशाल काँच के महल में न जाने किधर से एक भटका हुआ कुत्ता घुस गया। हजारों काँचों के टुकड़ों में अपनी शक्ल देखकर वह चौंका। उसने जिधर नजर डाली, उधर ही हजारों कुत्ते दिखायी दिये। वह समझा कि ये सब उस पर टूट पड़ेंगे और उसे मार डालेंगे। अपनी शान दिखाने के लिए वह भौंकने लगा, उसे सभी कुत्ते भौंकते हुए दिखायी पड़े। उसकी आवाज की ही प्रतिध्वनि उसके कानों में जोर–जोर से आती। उसका दिल धड़कने लगा। वह और जोर से भौंका। सब कुत्ते भी अधिक जोर से भौंकते दिखायी दिये। आखिर वह उन कुत्तों पर झपटा, वे भी उस पर झपटे। बेचारा जोर–जोर से उछला, कूदा, भौंका चिल्लाया। अन्त में गश खाकर गिर पड़ा।

कुछ देर बाद उसी महल में एक दूसरा कुत्ता आया। उसको भी हजारों कुत्ते दिखायी दिऐ। वह डरा नहीं, प्यार से उसने अपनी दुम हिलायी। सभी कुत्तों की दुम हिलती दिखायी दी। वह खूब खुश हुआ और कुत्तों की ओर अपनी पूँछ हिलाता बढ़ा। सभी कुत्ते उसकी ओर दुम हिलाते बढ़े। वह प्रसन्नता से उछला–कूदा, अपनी ही छाया से खेला, खुश हुआ और फिर पूँछ हिलाता बाहर चला गया।

जब मैं अपने मित्र को हमेशा परेशान, नाराज और चिड़चिड़ाते देखता हूँ तब इसी किस्से का स्मरण हो जाता है। मैं उनकी मिसाल भौंकने वाले कुत्ते से नहीं देना चाहता। यह तो बड़ी अशिष्टता होगी। पर इस कहानी से वे चाहें तो कुछ सबक जरूर सीख सकते हैं।

दुनिया काँच के महल जैसी है। अपने स्वभाव की छाया ही उस पर पड़ती है। 'आप भले तो जग भला' 'आप बुरे तो जग बुरा'। अगर आप प्रसन्नचित्त रहते हैं, दूसरों के दोषों को न देखकर उनके गुणों की ही ओर ध्यान देते हैं तो दुनिया भी आपसे नम्रता और प्रेम का बर्ताव करेगी। अगर आप हमेशा लोगों के ऐबों की ओर देखते हैं, उन्हें अपना शत्रु समझते हैं और उनकी ओर भौंका करते हैं तो फिर वे क्यों न आपकी ओर गुस्से से दौड़ेंगे ? अंग्रेजी में एक कहावत है कि अगर आप हँसेंगे तो दुनिया भी आपका साथ देगी, पर अगर आपको गुस्सा होना और रोना ही है तो दुनिया से दूर किसी जंगल में चले जाना ही हितकर होगा।

अमेरिका के मशहूर नेता अब्राहम लिंकन से किसी ने एक बार पूछा, "आपकी सफलता का सबसे बड़ा रहस्य क्या है ?"

उन्होंने जरा देर सोचकर उत्तर दिया, "मैं दूसरों की अनावश्यक नुक्ताचीनी कर उनका दिल नहीं दुखाता।"

मेरे मित्र की यही खास गलती है। वे दूसरों का दृष्टिकोण समझने की कोशिश नहीं करते। दूसरों के विचारों की, कामों की, भावनाओं की आलोचना करना ही अपना परम धर्म समझते हैं। उनका शायद यह ख्याल है कि ईश्वर ने उन्हें लोगों को सुधारने के लिए ही भेजा है। पर वे यह भूल जाते हैं कि शहद की एक बूँद ज्यादा मक्खियों को आकर्षित करती है, बजाय एक सेर जहर के।

दुनिया में पूर्ण कौन है ? हरेक में कुछ न कुछ त्रुटियाँ रहती हैं। प्रत्येक व्यक्ति से गलतियाँ होती हैं। फिर एक–दूसरे को सुधारने की कोशिश करना अनुचित ही समझना चाहिए। जैसा ईसा ने कहा था, "लोग दूसरों की आँखों का तिनका तो देखते हैं पर अपनी आँख के शहतीर को नहीं देखते।" दूसरों को सीख देना तो बहुत आसान काम है, अपने ही आदर्शों पर स्वयं अमल करना कठिन है।" अगर हम अपने को ही सुधारने का प्रयत्न करें और दूसरों के अवगुणों पर टीका–टिप्पणी करना बन्द कर दें तो हमारे मित्र जैसा हमारा हाल कभी नहीं होगा।

इसी सिलसिले में एक बात और आप तो दूसरों की नुक्ताचीनी नहीं करेंगे, ऐसी उम्मीद है, पर दूसरे ही अगर आपकी नुक्ताचीनी करना न छोड़ें तो ? मेरे मित्र अपनी बुराई या आलोचना सुनकर आगबबूला हो जाते हैं, भले ही वह दुनिया की दिनभर बुराई करते रहें। पर आपके लिए तो ऐसे मौके पर दादू की पंक्तियाँ गुनगुना लेना बड़ा कारगर होगा:

निन्दक बाबा वीर हमारा, बिनही कौड़ी बहै बिचारा।

आपन डूबे और को तारे, ऐसा प्रीतम पार उतारे॥

अगर सचमुच कुछ त्रुटियाँ हैं, जिनकी ओर 'निन्दक' हमारा ध्यान खींचता है तो उन अवगुणों को दूर करना हम सभी का कर्तव्य हो जाता है। जिसने उनकी ओर ध्यान दिलाया उसका उपकार ही मानना चाहिए। एक दिन एक सज्जन से कुछ गलती हो गयी। हमारे मित्र तुरन्त बिगड़कर बोले,"देखिए महाशय यह आपकी सरासर गलती है, आइन्दा ऐसा करेंगे तो ठीक नहीं होगा।" बेचारे महाशय जी बड़े दु:खी हुए। उनका अपमान हो गया। मन में क्रोध जाग्रत हुआ और वे बिना कुछ उत्तर दिये ही उठकर चले गये। दूसरे दिन मैंने उन महाशय जी से एकान्त में कहा. "देखिए, गलती तो सभी से होती है। ऐसी गलती मैं भी कर चुका हूँ, दु:खी होने का कोई कारण नहीं। आप तो बड़े समझदार हैं। कोशिश करें तो यह क्या, बड़ी से बड़ी गलतियाँ सुधारी जा सकती हैं। ठीक है न ?"

उनकी आँखों में आँसू छलछला आए। बड़े प्रेम से बोले, "जी हाँ, मैं अपनी गलती मानता हूँ। आगे भला मैं वही गलती क्यों करने लगा! पर कोई मुहब्बत से पेश आये तब न! आदमी प्रेम का भूखा रहता है।"

जब सरदार पृथ्वीसिंह ने हिंसा का मार्ग त्यागकर अपने को बापू के सामने अर्पण कर दिया तब बापू को बहुत खुशी और सन्तोष हुआ। पर बापू जहाँ प्रेम और सहानुभूति की मूर्ति थे, वहाँ बड़े परीक्षक भी थे। कुछ

दिनों बाद उन्होंने पृथ्वीसिंह से कहा, "सरदार साहब, अगर आप सेवाग्राम में आकर मेरे आश्रम में रह सकें तभी मैं समझूँगा कि आपने अहिंसा का पाठ सचमुच सीख लिया है।"

पृथ्वीसिंह जरा चौंककर बोले, "आपका क्या मतलब बापूजी ?"

भाई, मेरा आश्रम तो एक प्रयोगशाला जैसा ही है। जिन लोगों की कहीं नहीं बनती, अक्सर वे मेरे पास आ जाते हैं। उन सबको एक–साथ रखने में मैं सीमेंट का काम करता हूँ और वह सीमेंट मेरी अहिंसा ही है।

"मैं समझ गया, बापूजी ! " पृथ्वीसिंह ने मुस्कराकर कहा ! आगे की कहानी यहाँ कहने की जरूरत नहीं, पर इसमें बापू के प्रेममय व्यवहार की एक झलक मिल जाती है। उन्होंने अपने प्रेम और सहानुभूति से कितने ही व्यक्तियों को अपनी ओर खींचा था। बापू कड़ी–से–कड़ी आलोचना कर सकते थे और करते भी थे, पर हँसकर मीठी चुटकियाँ लेकर, अपना प्रेम दरसाकर।

अमेरिका के मशहूर लेखक इमर्सन की एक घटना याद आती है। उन्हे गायें पालने का शौक था। इसलिए गायें और नन्हें बछड़े उनके मकान के पास एक कुटी में रहते थे। एक बार जोर की बारिश आनेवाली थी। सभी गायें तो झोपड़ी के अन्दर चली गयीं, पर एक बछड़ा बाहर ही रह गया । इमर्सन और उनका लड़का दोनों मिलकर उस बछड़े को पकड़कर खींचने लगे कि वह कुटी में चला आये पर ज्यों–ज्यों उन्होंने जोर से खींचना शुरू किया त्यों–त्यों वह बछड़ा भी सारी ताकत लगाकर पीछे हटने लगा। बेचारे इमर्सन बड़े परेशान हुए। इतने में उनकी बूढ़ी नौकरानी उधर से निकली। जैसे ही उसने यह तमाशा देखा, वह दौड़ी आयी अपना अँगूठा बछड़े के मूँह में प्यार से डालकर उसे झोपड़ी के तरफ ले जाने लगी। बछड़ा चुपचाप कुटी के अन्दर चला गया।

वह अनपढ़ नौकरानी किताबें और कविताएँ लिखना नहीं जानती थी, पर व्यवहार–कुशल अवश्य थी और जब जानवर भी प्रेम की भाषा समझते हैं तो फिर मनुष्य क्योंकर न समझेंगे ?

कल हमारे मित्र का रसोईया बिना खबर दिये ही चला गया। बेचारा करता भी क्या ! सुबह से शाम तक उसको महाशय की डाँट खानी पड़ती थी। "तूने आज दाल बिलकुल बिगाड़ दी। उसमें नमक बहुत डाल दिया।" " अरे बेवकूफ तूने साग में नमक ही नहीं डाला।" " यह जली रोटी कौन खायेगा रे !" आदि की झड़ी लगी रहती थी। जब कोई चीज जरा भी बिगड़ जाती तब तो उसे दिल खोलकर डाँटा जाता। पर अच्छा भोजन बनने पर भी तारीफ के दो शब्द न बोले जाते। "वाह ! तारीफ कर देने से उसका दिमाग चढ़ जायेगा।" मेरे मित्र कह देते। ठीक है। तो वह भी आदमी है। उसके भी दिल है बेचारा कुछ रूपये का नौकर, यन्त्र नहीं बन सकता। तंग आकर भाग जाने के सिवा और क्या चारा था ?

कहने का मतलब यह कि उनकी किसी से नहीं बनती–न मित्रों से, न ऑफिस के कर्मचारियों से और न घर के नौकरों से।

उस पर भी मजा यह है कि वे अपनी जिन्दगी और विचारों से पूरी तरह सन्तुष्ट हैं। वे मानते हैं कि उनका जीवन, आचार और विचार आदर्श हैं। दूसरे लोग जो उनका सम्मान नहीं करते, मूर्ख हैं।

ग्रीस के महान सन्त सुकरात ने एक बात बड़े पते की कही थी, "जो मनुष्य मूर्ख है और जानता है कि वह मूर्ख है, वह ज्ञानी है, पर जो मूर्ख है और नहीं जानता कि वह मूर्ख है, वह सबसे बड़ा मूर्ख है।"

अच्छा हो, सुकरात के इस विचार को मेरे मित्र अपने कमरे में लिखकर टाँग लें। पर उनसे यह कहने का साहस कौन करे ?

शब्दार्थ–टिप्पणी

प्रतिध्वनि किसी वस्तु से टकराकर वापस आई ध्वनि **झपटना** नोंचना, आक्रमण करना **अशिष्टता** शिष्ट न हो ऐसा व्यवहार **मिशाल** उदाहरण, नमूना **सबक** शिक्षा, पाठ **ऐब** खोट, दोष, बुराई **खास** विशेष **शहतीर** पाटन के नीचे लगनेवाली कड़ी **अमल** व्यवहार **नुक्ताचीनी** दोष निकालने का काम, छिद्रान्वषेण **आलोचना** बुराई **अवगुण** खराब गुण, बुरे गुण **निन्दक** निन्दा करनेवाला **उम्मीद** आशा **कुटी** झोंपड़ी **दादू** भक्तिकालीन एक प्रसिद्ध कवि **त्रुटि** गलती, कमी

मुहावरे

गश खाकर गिरना मूर्छित होना, बेहोश होना **नुक्ताचीनी करना** दोष निकालना, निन्दा करना **सबक लेना** सीख लेना **चुटकी लेना** मजाक उड़ाना **आग बबूला होना** अत्यधिक क्रोधित होना **आँसू छलछलाना** दु:ख के कारण आँखों में आँसू आना **दुम हिलाना** चापलूसी करना **प्यार की झड़ी लगाना** बहुत प्यार करना **दिमाग चढ़ना** घमंड होना, अभिमान आना **कोई चारा न होना** कोई उपाय न होना **टूट पड़ना** आक्रमण करना

अभ्यास

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

(1) काँच के महल में पहले कुत्ते ने क्या किया ?

(2) दूसरा कुत्ता काँच के महल में किससे खेल रहा था ?

(3) लेखक के मित्र किसे अपना परम धर्म समझते हैं ?

(4) गाय पालने का शौक किसे था ?

(5) सुकरात के अनुसार ज्ञानी कौन है ?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के एक शब्द में उत्तर दीजिए :

(1) सरदार पृथ्वीसिंह ने किसके सामने आत्म-समर्पण किया ?

(2) पाठ में मूर्ख की परिभाषा किसने दी है ?

(3) सेवाग्राम में विशेष जातियों को जोड़ने का काम कौन करता है ?

(4) इमर्सन की नौकरानी व्यवहार में कैसी थी ?

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

(1) लेखक अपने मित्र को हमेशा किस अवस्था में देखते हैं ?

(2) लोगों के दृष्टिकोण के बारे में ईसा ने क्या कहा था ?

(3) बापू के किन गुणों के कारण लोग उनकी ओर आकृष्ट होते थे ?

(4) गाँधीजी लोगों की आलोचना किस प्रकार करते थे ?

(5) निन्दक हमारा ध्यान किन बातों की ओर खींचता है ?

2. निम्नलिखित प्रश्नों का संक्षेप में उत्तर लिखिए :

(1) "दुनिया काँच के महल जैसी है।" - समझाइए।

(2) अब्राहम-लिंकन ने अपनी सफलता का क्या रहस्य बताया ?

(3) गांधीजी ने अपने आश्रम को प्रयोगशाला क्यों कहा है ?

(4) लेखक के मित्र का रसोइया क्यों भाग गया ?

(5) "आप भला तो जग भला" शीर्षक का क्या आशय है ?

3. निम्नलिखित पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए :

(1) "अगर आप हँसेंगे तो दुनिया भी आपका साथ देगी।"

(2) "शहर की एक बूँद ज्यादा मक्खियों को आकर्षित करती है, बजाय एक सेर जहर के।"

(3) "लोग दूसरों की आँख का तिनका तो देखते हैं पर अपनी आँख की शहतीर को नहीं देखते।"

4. सही विकल्प चुनकर वाक्य पूर्ण कीजिए :

(1) लोग आपसे प्रेम और नम्रता का वर्ताव करेंगे, जब आप...

- हमेंशा लोगों के ऐबों की ओर देखेंगे।
- लोगों को अपना शत्रु समझेंगे।
- लोगों के दोष न देखकर उनके गुणों की ओर ध्यान देंगे।

(2) दूसरों को सीख देना तो बहुत आसान काम है। अपने ही.......

- आदर्शों पर अमल करना कठिन है।
- बुराइयों पर ध्यान देना कठिन है।
- निन्दकों को माफ करना कठिन है।

(3) अगर आप सेवाग्राम में मेरे आश्रम में आकर रह सकें तभी मैं समझूगाँ कि...

- आपने प्रयोग करना सीख लिया है।
- आपने शिष्टाचार का पाठ सीख लिया है।
- आपने अहिंसा का पाठ सचमुच सीख लिया है।

(4) निन्दक बाबा वीर हमारा.....

- ऐसा प्रीतम पार उतारे।
- बिनही कौड़ी बहै बिचारा।
- आपन डूबै और को तारे।

5. (क) मुहावरों के अर्थ देकर वाक्य में प्रयोग कीजिए :

(1) टूट पड़ना

(2) दुम हिलाना

(3) नुक्ताचीनी करना

(4) चुटकी लेना

(5) दिमाग चढ़ना

(ख) विरुद्धार्थी शब्द लिखिए :

(1) मान ×	(2) सज्जन ×
(3) उपकार ×	(4) आवश्यक ×

(ग) पर्यायवाची शब्द लिखिए :

(1) मित्र (2) कुत्ता

(3) गलती (4) निन्दा

(5) तारीफ

(घ) भाववाचक संज्ञा बनाइए :

(1) अशिष्ट (2) मूर्ख

(3) सहज (4) सफल

(5) शत्रु

प्रवृत्ति

- प्रचलित लोकोक्तियों का संग्रह करके अलबम तैयार कीजिए।
- महापुरुषों जैसे–अब्राहम लिंकन, महात्मा गांधी, सरदार पटेल इत्यादि द्वारा कही गई बातों का संकलन करके प्रोजेक्ट तैयार कीजिए।

पुनरावर्तन 2

1. सही जोड़े मिलाइए :

अ	ब
(1) शिवाजी का सच्चा स्वरूप	(1) डॉ. शंभुनाथ तिवारी
(2) वह देश कौन-सा है ?	(2) श्रीमन्नारायण
(3) बादलजी	(3) सेठ गोविंददास
(4) आप भले तो जग भला	(4) रामनरेश त्रिपाठी

2. निम्नलिखित पंक्तियाँ किस काव्य से ली गई हैं ? बताइए :

(1) बड़ा हुआ तो क्या हुआ जैसे पेड़ खजूर।

(2) नदियाँ ताल-तलैया प्यासे, प्यासा-प्यासा सागर भी।

(3) जिसका चरण निरंतर रतनेश धो रहा है।

3. (अ) विरुद्धार्थी शब्द दीजिए :

(1) मान ×   (2) सुधा ×

(3) प्रेम ×   (4) वीर ×

(ब) मुहावरों के अर्थ देकर वाक्यों में प्रयोग कीजिए :

(1) नुक्ताचीनी करना   (2) मुँह ताकना

(3) आग-बबूला होना

(क) पर्यायवाची शब्द दीजिए :

(1) मुकुट   (2) बादल

(3) सुगंध   (4) तारीफ

4. पाठ्यपुस्तक में से किसी एक परिच्छेद का स्वच्छ एवं सुंदर अक्षरों में लेखन कीजिए।

5. 'बादलजी' काव्य को लिखकर उसका भाववाही गान कीजिए।

6. साइंस-सिटी विषय पर आठ-दस वाक्य लिखिए।

7. निम्नलिखित विषयों पर पाँच-सात वाक्य लिखिए

(1) वर्षा

(2) शिवाजी

(3) डॉ. होमी जहाँगीर भाभा

8. निम्नलिखित संज्ञाओं का वर्गीकरण करके सारणी में लिखिए :

संजय, कृष्ण, लड़का, सत्य, न्याय, पहाड़, पारा, तांबा, अनाज, बाजार

व्यक्तिवाचक	जातिवाचक	द्रव्यवाचक	समूहवाचक	भाववाचक

9. अपने मनपसंद पर्यटन-स्थल का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

10. निम्नलिखित दोहे का भावार्थ लिखिए :

बुरा जो देखने मै चला, बुरा न मिलिया कोय।
जो दिल खोजा आपना, मुझसा बुरा न कोय॥